॥ श्रीगुरुदत्त प्रसन्न ॥

स्वल्पालाप गायन.

1927

प्रथम भाग. 8/1/27

संपादक, मुद्रक, और प्रकाशक.

श्रीमान पंडित विष्णु दिगंबर पलुस्कर.

गायनाचार्य, गान्धर्व महाविद्यालय-मंडळ द्वारा रचित.

सन १९२३.

सर्व प्रकारके छापनेका सब अधिकार पुस्तक कर्ताने
आपने स्वाधीन रखा है.

[प्रति १०००] [मूल्य १ रुपया.

"गांधर्व महाविद्यालय" मंडळ,

अनुक्रमणिका.

नंबर.	राग.	चिजोंके नाम.	पृष्ठांक.
१.	छायालगत्व.	सरस्वती शारदा.	१—६
२.	कौशिया.	केही कहो विपती.	७—११
३.	झिंजोटी.	प्रभु मोरे अवगुण.	१२—१८
४.	खमाज.	हम भक्तन के भक्त.	१९—२५
५.	भूपाली.	गाईये गणपती.	२६—३२
६.	बिहाग.	नाम जपन क्यों.	३३—४०
७.	झिंजोटी.	बार बार समजाय.	४१ ४८

भवदीय,

विष्णु दिगंबर.

॥ श्रीगुरुदत्त प्रसन्न ॥

स्वल्पालाप गायन.

राग छायालगत्व भैरवी, नं. १.

इस राग में गंधार, धैयत और निषाद अतिकोमल. ऋषभ दो एक शुद्ध और दूसरा अतिकोमल. मध्यम दो एक शुद्ध और दूसरा तीव्रतर. शुद्ध ऋषभ और तीव्रतर मध्यम के वास्ते निशानी होगी.

सरस्वती शारदा विद्यादानी दयानी दुःख हरनी जगत जननी ज्वाला मुखी माता। किजे सुदृष्टी सेवक जान इतनो अपनोकर बक्स दीजे तान ताल कर सुहाग बुध आलंकार ॥

(सरस्वती शारदा) इस गीत पर निम्न लिखित आलाप, गाने के साथ तथा ताल के साथ लेना.

ताल तीनताल.

—:o:—

तार		
मध्य	मृ ग रि स स स ध॰ ० ० रि ग मृ ⚠ मृ मृ	
मन्द्र	नि	

स र स्व ती शा . र दा आ . . स र
३ २ १ २ ३

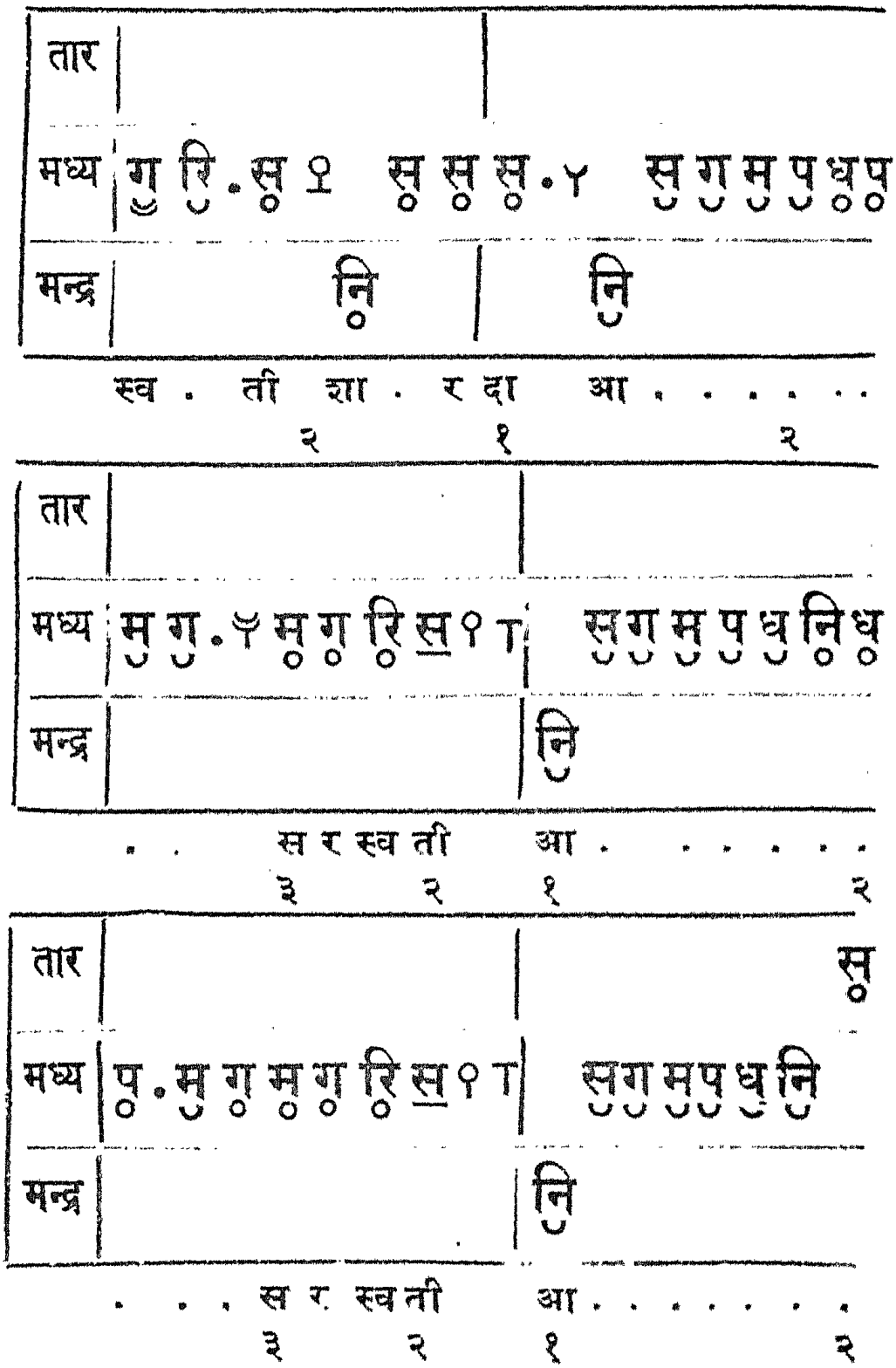
तार
मध्य गु रि . सु १ सु सु सु . ४ सु ग म प ध प
मन्द्र नि | नि
स्व . ती शा . र दा आ . . . . .
२ १ २
तार
मध्य म ग . ४ म ग रि स १ ा | सु ग म प ध नि ध
मन्द्र | नि
. . स र स्व ती आ . . . . . .
३ २ १ २
तार | सु
मध्य प . म ग म ग रि स १ ा | सु ग म प ध नि
मन्द्र | नि
. . . स र स्व ती आ . . . . . .
३ २ १ २

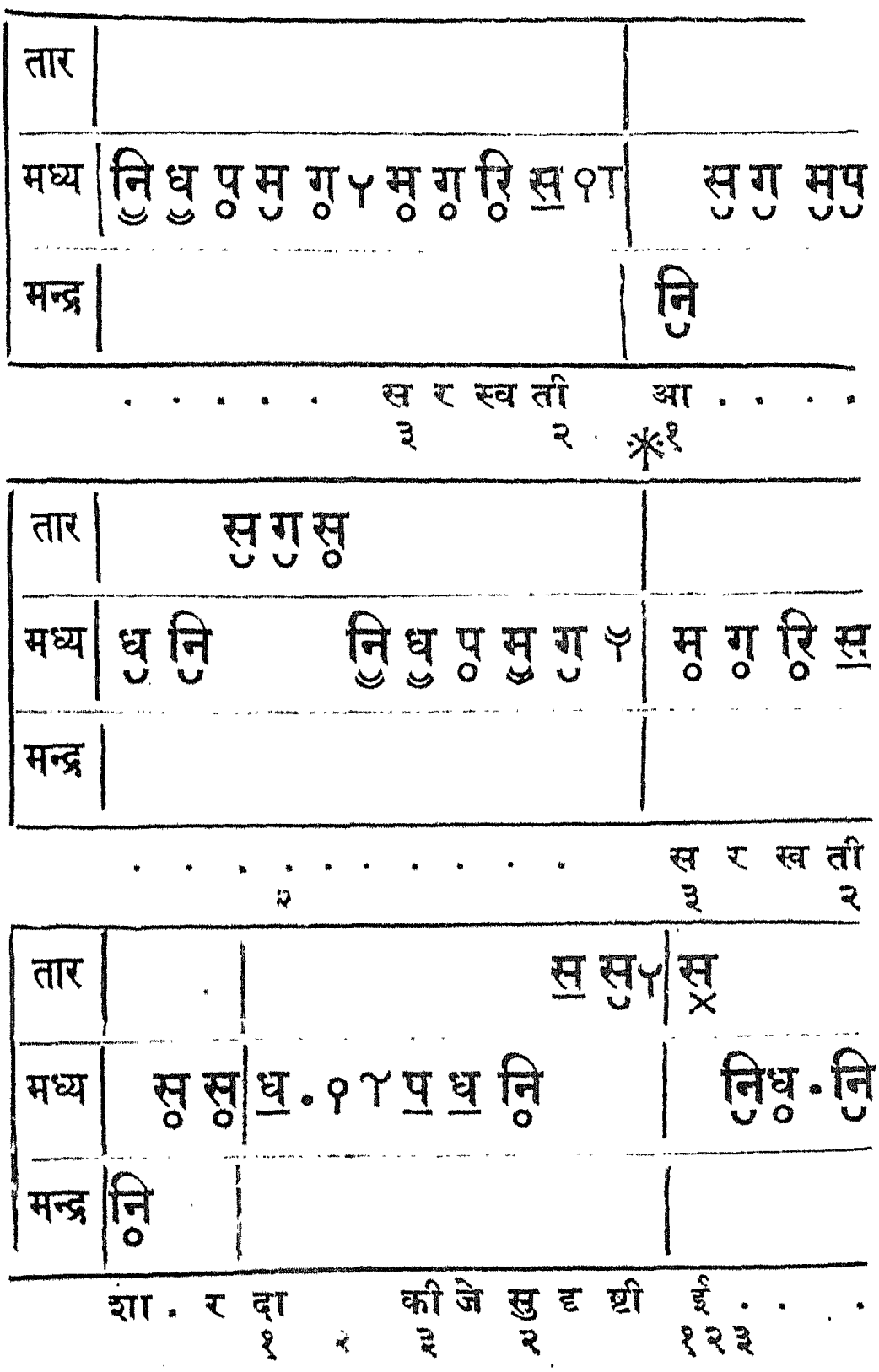
तार
मध्य
मन्द्र
. . . . . स र स्व ती आ . . . .
३ २ *१
तार
मध्य
मन्द्र
. . . . . स र स्व ती
२ ३ २
तार
मध्य
मन्द्र
शा . र दा की जे सु द ष्टी ई . . .
१ २ ३ २ १२३

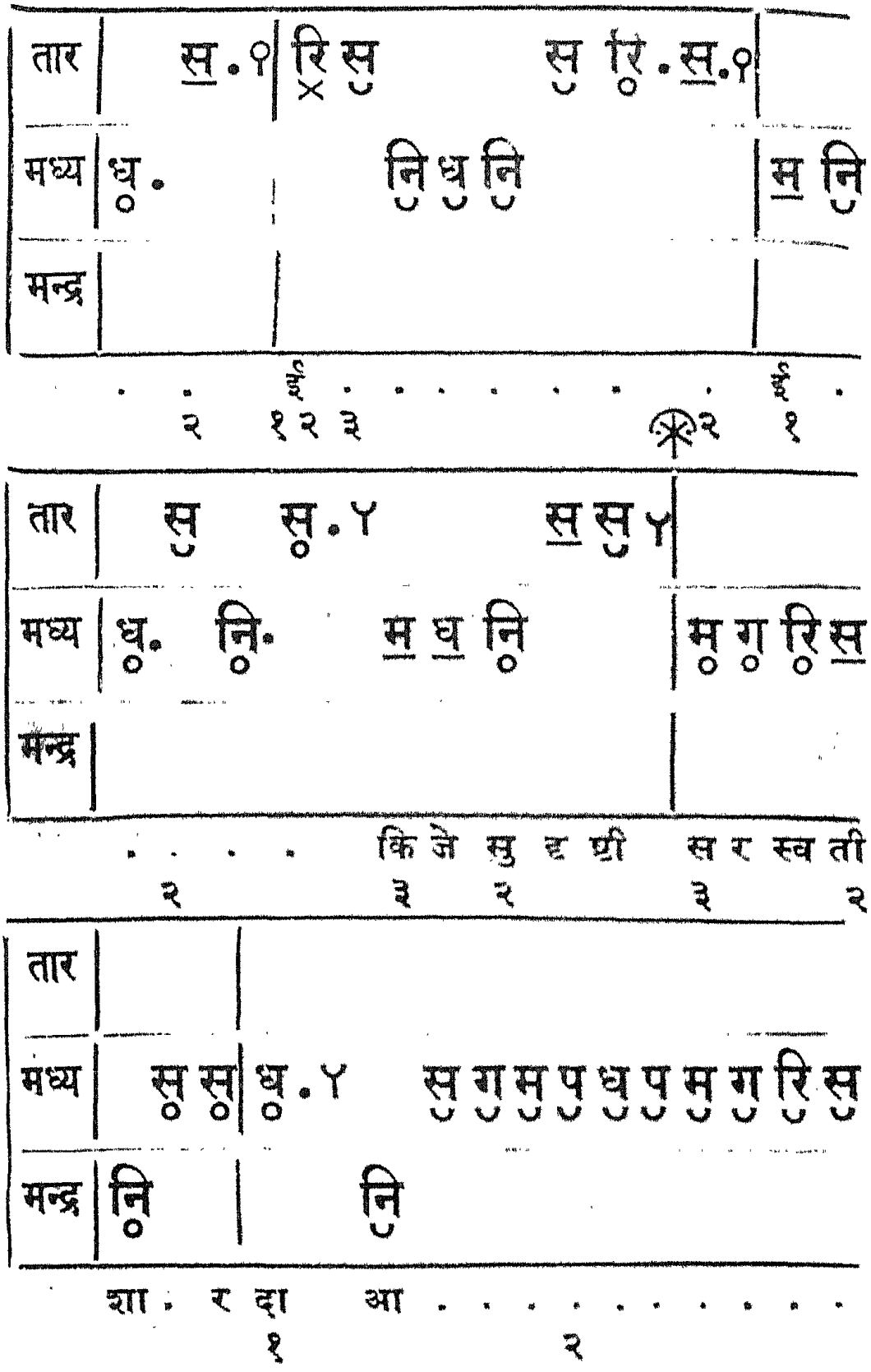
तार
स॰१ रि सु सु रि॰ स॰१
मध्य
ध॰ नि ध नि म नि
मन्द्र
ई ई
२ १२ ३ २ १
तार
सु सु॰४ स सु ४
मध्य
ध॰ नि॰ म ध नि म ग रि स
मन्द्र
कि जे सु द्र ष्टी स र स्व ती
२ ३ २ ३ २
तार
मध्य
सु सु ध॰४ सु ग म प ध प म ग रि सु
मन्द्र
नि नि
शा॰ र दा आ
१ २

तार		
मध्य	सु॒ मृ॒ ग॒ रि॒ स॒	स॒ स॒ ध॒॰१ सु॒ ग॒ म॒ प॒ ध॒
मन्द्र	नि॒	नि॒

. स र स्व ती शा . र दा आ . . . .
३ २ १ २

तार		
मध्य	नि॒ ध॒ प॒ म॒ ग॒ रि॒ म॒ ग॒ रि॒ स॒	स॒ स॒ ध॒॰१
मन्द्र	नि॒	नि॒

. . . . . स र स्व ती शा . र दा आ
३ २ १

तार	सु॒	
मध्य	सु॒ ग॒ म॒ प॒ ध॒ नि॒	नि॒ ध॒ प॒ म॒ म॒ ग॒ रि॒
मन्द्र		

. . . . . स र स्व
२ ३

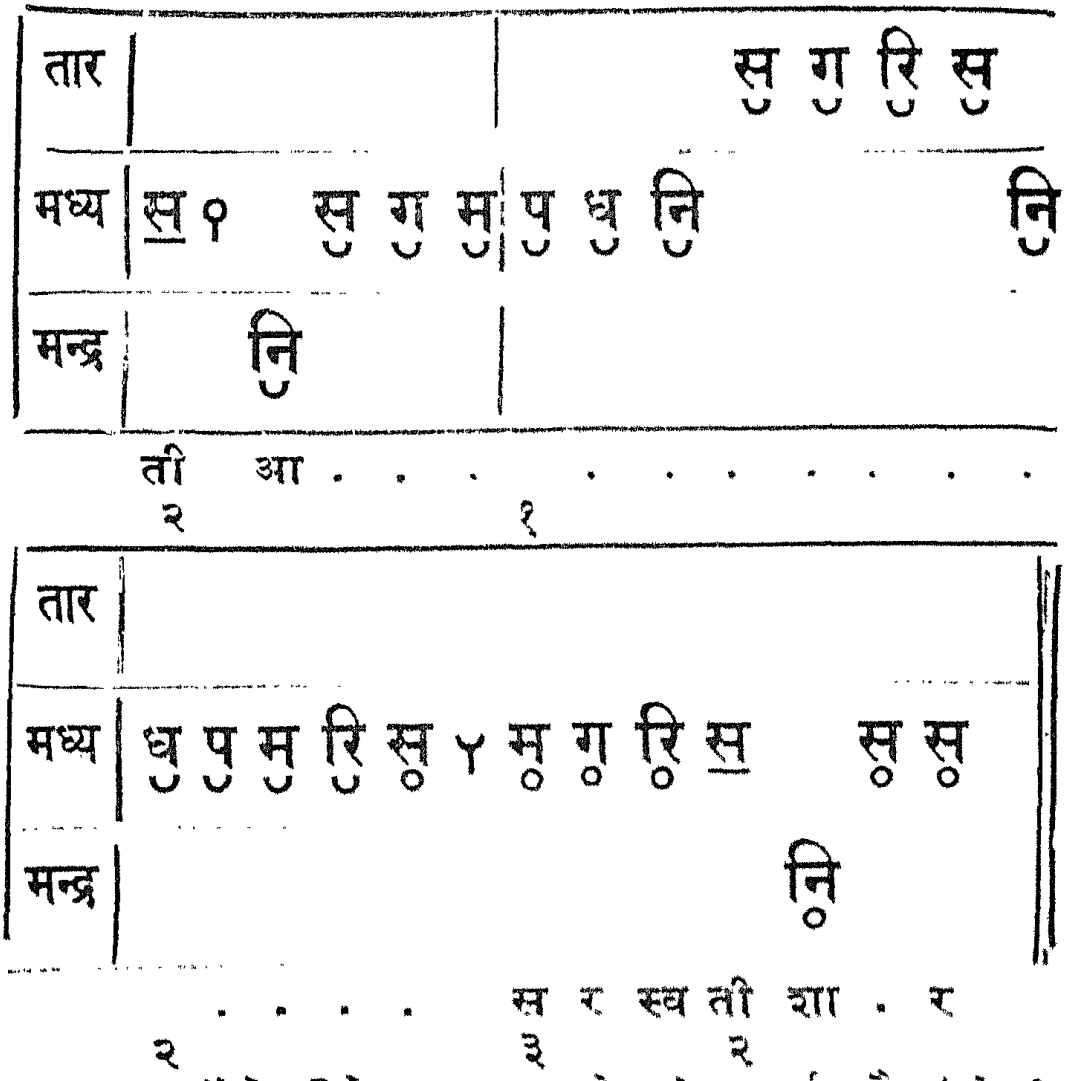

अध्यापकों के लिये सूचना–इस के आगे अस्ताई और अंतरे की दूगण सीखलानी.

राग कौशिया, नं. २.

इस रागमें सब शुद्ध स्वर लगते हैं.

केही कहो विपती अतिभारी रघुवीर दीन हितकारी।
मम हृदय भवन प्रभु तोरा तह आय बसे बहु चोरा ॥

आगे के आलाप (केही कहो विपती) इस गीत पर लेना.

ताल तीनताल.

——:o:——

तार		
मध्य	स॒ स॒·१	स॒ रि॒ ग॒ स॒·१
मन्द्र	प॒ ध॒ प॒ नि॒ नि॒	प॒ नि॒ नि॒

के ही क हो वि प ती आ . . . . . .
३ २ १ २

तार	
मध्य	स॒रिगसरिमगरि स॒·१
मन्द्र	प॒ ध॒ प॒ नि॒ T प॒ नि॒ नि॒

के ही क हो आ . . . . . .
३ २ १ २

तार	
मध्य	स॒ रि॒ ग॒ स॒ रि॒ प॒ म॒ ग॒ रि॒
मन्द्र	प॒ ध॒ प॒ नि॒ प॒ नि॒ नि॒

के ही क हो आ . . . . . .
३ २ १ २

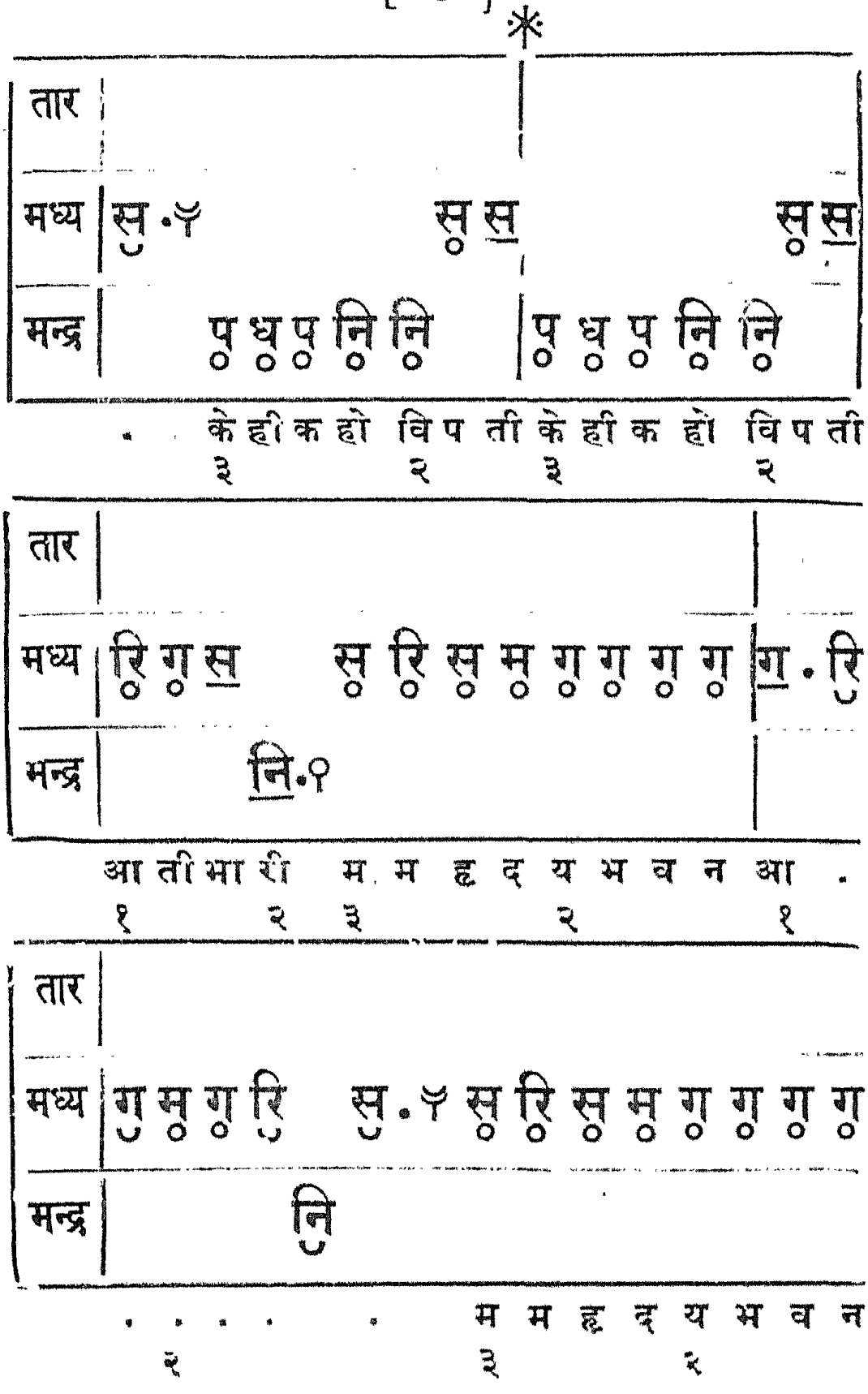
तार
मध्य
मन्द्र
के ही क हो वि प ती के ही क हो वि प ती
आ ती भा री म म ह द य भ व न आ .
. . . . . म म ह द य भ व न

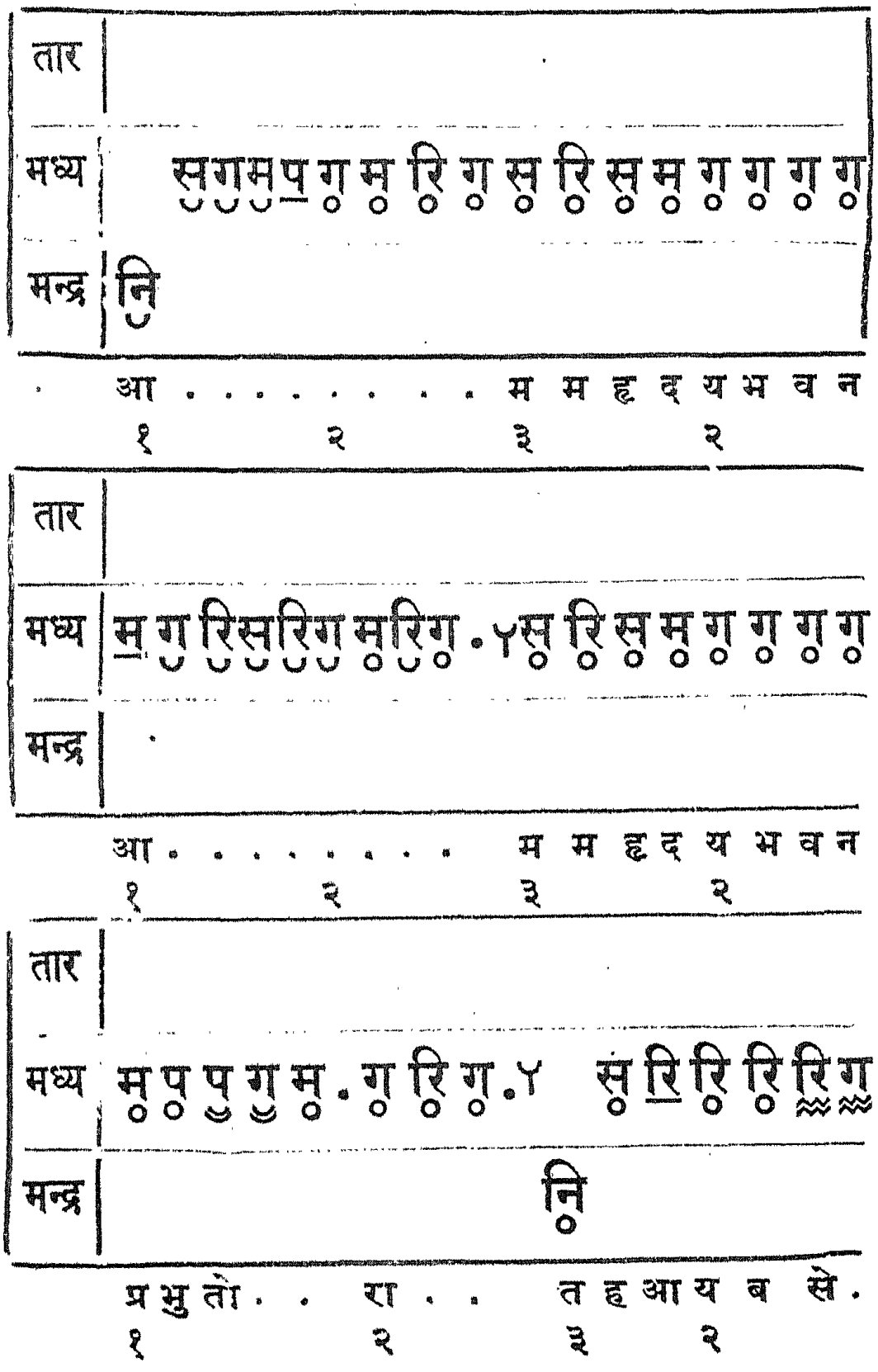
तार
मध्य सगमपगमरिगसरिसमगगगग
मन्द्र नि
आ . . . . . म म ह द य भ व न
१ २ ३ २
तार
मध्य मगरिसरिगमरिग.५सरिसमगगगग
मन्द्र
आ . . . . . म म ह द य भ व न
१ २ ३ २
तार
मध्य मपपगम.गरिग.५ सरिरिरिरिग
मन्द्र नि
प्रभु तो . . रा . . त ह आ य ब से.
१ २ ३ २

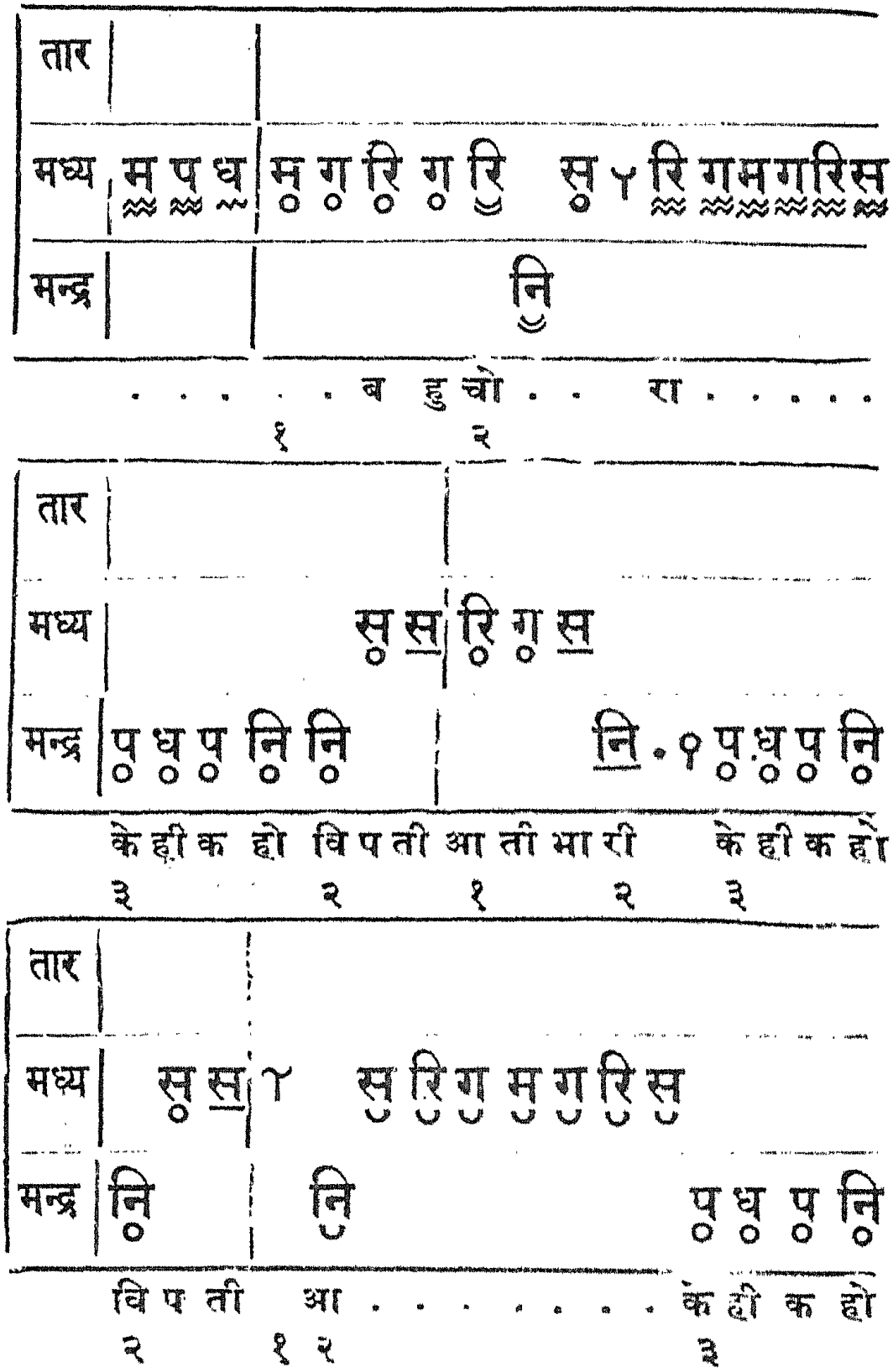
तार
मध्य म प ध सं गं रिं गं रि सं ऽ रि ग म ग रि स
मन्द्र नि̲
. . . . . ब हु चो . . रा . . . . .
१ २
तार
मध्य सं सं̲ रिं गं सं̲
मन्द्र प ध प नि̲ नि̲ नि̲ . १ प ध प नि̲
के ही क हो वि प ती आ ती भा री के ही क हो
३ २ १ २ ३
तार
मध्य सं सं̲ १ सं रिं गं मं गं रिं सं
मन्द्र नि̲ नि̲ प ध प नि̲
वि प ती आ . . . . . के ही क हो
२ १ २ ३

तार		
मध्य	सृ सृ	ा सृरिृगृमृपृमृगृरिसृ.
मन्द्र	निृ	निृ पृधृपृ

विपती आ. . . . . के हीक
२ १ २ ३

तार		
मध्य	सृसृ	सृरिृगृमृपृधृनिृनिृधृपृ
मन्द्र	निृनिृ	निृ

हो विपती आ. . . . . .
२ १ २

तार		
मध्य	मृगृरिसृ.ँ	सृसृ
मन्द्र		पृधृपृनिृनिृ

. . . . के हीक हो विपती
३ २

अध्यापकों के लिये सूचना—इस के आगे अस्ताई और अंतरे की
क्रम सीखलानां.

राग झिंजोटी, नं. ३.

इस राग में दो गंधार और दो निषाद लगते हैं. एक शुद्ध और दूसरा अतिकोमल फक्त अतिकोमल गंधार और अतिकोमल निषाद के वास्ते निशानी होगी. बाकी के सब शुद्ध स्वर लगते हैं.

प्रभु मोरे अवगुण चित्त न धरो।
सम दरशी है नाम तिहारो चाहे तो पार करो।
इकनदिया इक नाले कहावत मेलोहि नीर भरो॥
आगे के आलाप (प्रभु मोरे अवगुण) इस गीत पर लेना.

ताल तीनताल.

तार		
मध्य	ग॒ ग॒ म॒ प॒ ग॒ म॒ म॒ म॒ ॰	ग॒ म॒ प॒ ध॒ ॰ नि॒ प॒ ॰
मन्द्र		

प्र भु मो रे अ व गु ण आ . . . . .
२ ३ ०२ १

तार		सु
मध्य	ग॒ ग॒ म॒ प॒ ग॒ म॒ म॒ म॒ ॰	ग॒ म॒ प॒ ध॒ ॰ नि॒ प॒ ॰
मन्द्र		

प्र भु मो रे अ व गु ण आ . . . . .
२ ०३ २ १

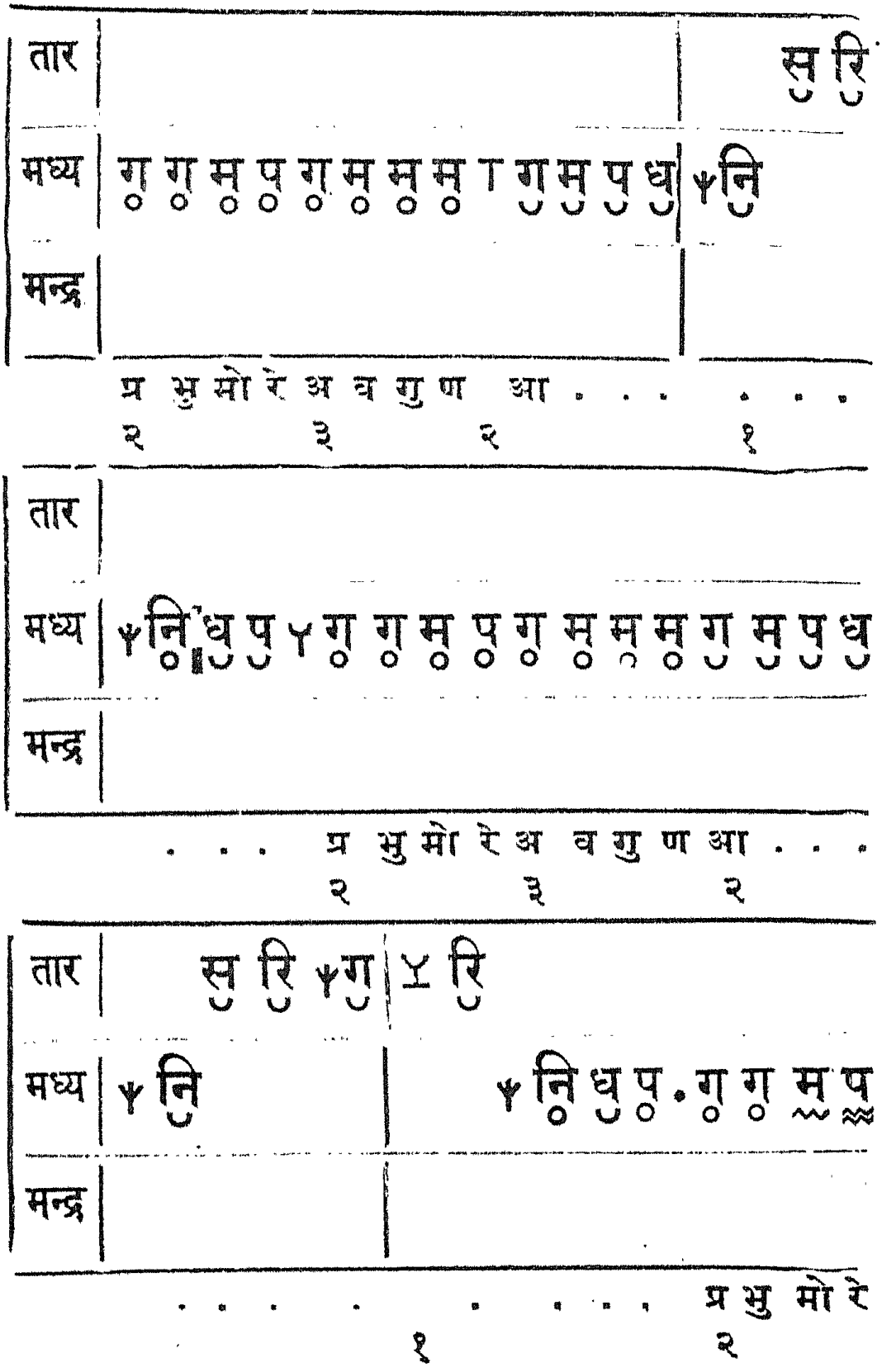
तार
सु रि
मध्य
ग ग म प ग म म म ा ग म प ध ऽनि
मन्द्र
प्र भु मो रे अ व गु ण आ . . . . . .
२ ३ २ १
तार
मध्य
ऽनि ध प ऽग ग म प ग म म म ग म प ध
मन्द्र
. . . प्र भु मो रे अ व गु ण आ . . .
२ ३ २
तार
सु रि ऽग ऽरि
मध्य
ऽनि ऽनि ध प . ग ग म प
मन्द्र
. . . . . प्र भु मो रे
१ २

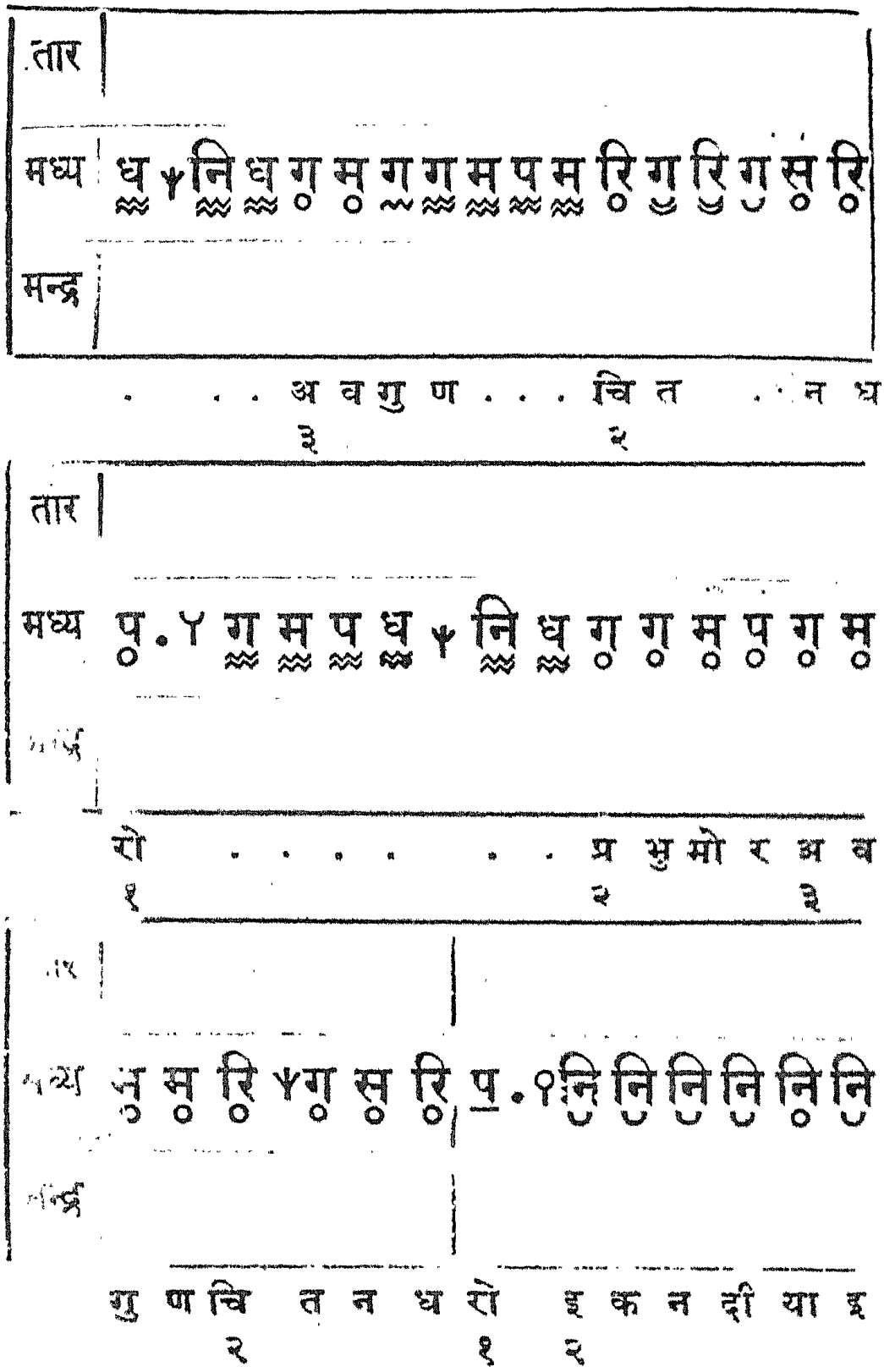
तार
मध्य ध ५ नि ध ग म ग ग म प म रि ग रि ग स रि
मन्द्र
. . . अ व गु ण . . . चि त . न ध
३ २
तार
मध्य प . ५ ग म प ध ५ नि ध ग ग म प ग म
मन्द्र
रो . . . . . प्र भु मो र अ व
१ २ ३
तार
मध्य ग म रि ५ ग स रि प . १ नि नि नि नि नि नि
मन्द्र
गु ण चि त न ध रो इ क न दी या इ
२ १ २

तार	सु सु सु सु सु सु सु	स
मध्य	नि	धु ४निधु निनिनि
मन्द्र		

क ना ले क हा व त आ . . . . इ क न
३ २ १ २

तार	सु सु सु सु सु सु	सरि४ग
मध्य	नि नि नि नि	पधु
मन्द्र		

दी या इ कना ले क हा व त आ . . . .
३ २

तार	रि सु १	सु.४
मध्य	नि	निधु. निनिनिनिनिनिनि
मन्द्र		

. . . . . इ क न दी या इ क
१ २

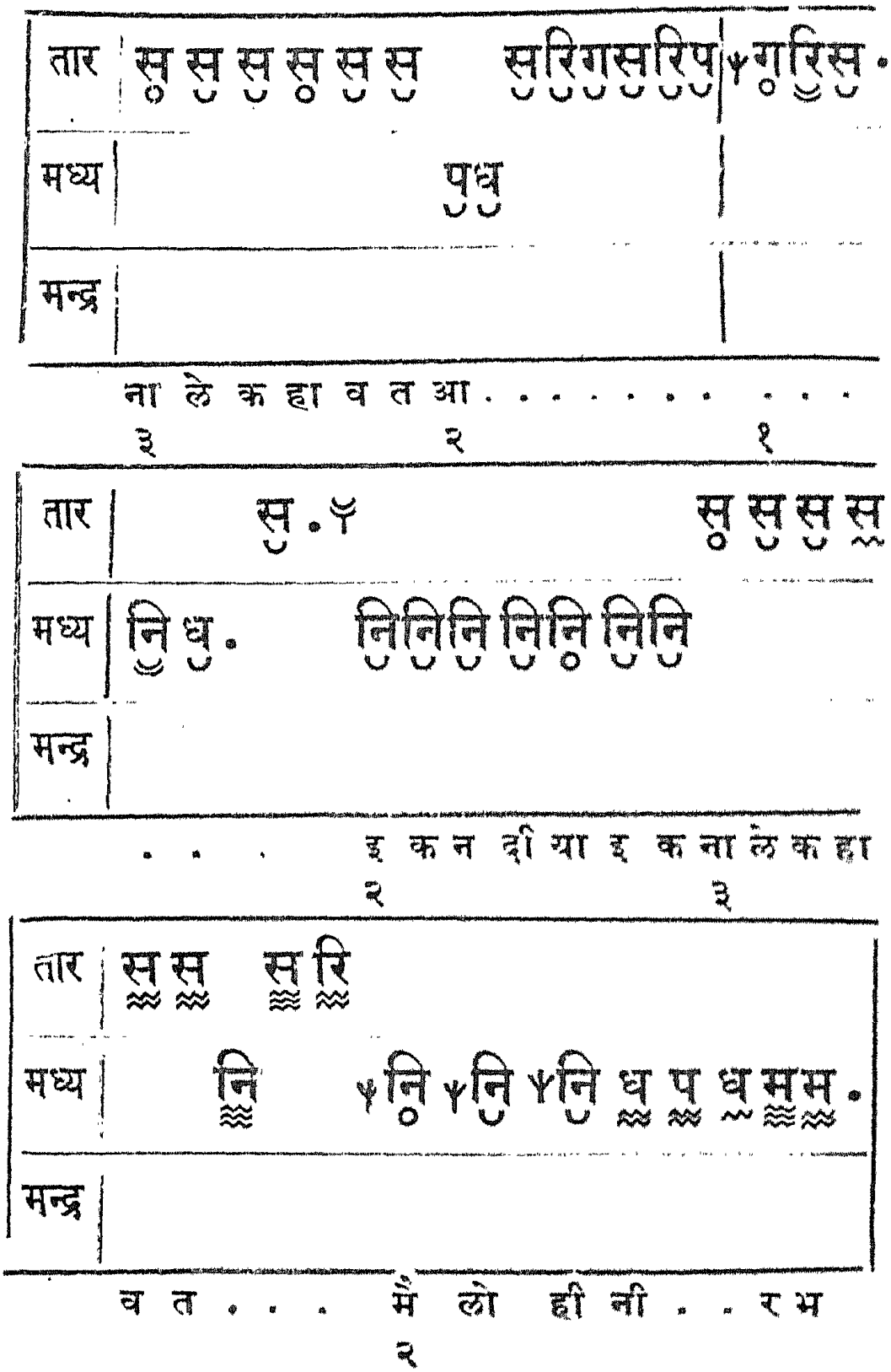
तार सु सु सु सु सु सु सुरिगसरिप ५गुरिसु
मध्य पुधु
मन्द्र
ना ले क हा व त आ . . . . . .
३ २ १
तार सु.५ सुसुसुसु
मध्य निधु. निनिनिनिनिनिनि
मन्द्र
. . . इ क न दी या इ क ना ले क हा
२ ३
तार ससस सरि
मध्य नि ५नि ५नि ५नि धपधमम.
मन्द्र
व त . . . मै लो ही नी . . र भ
२

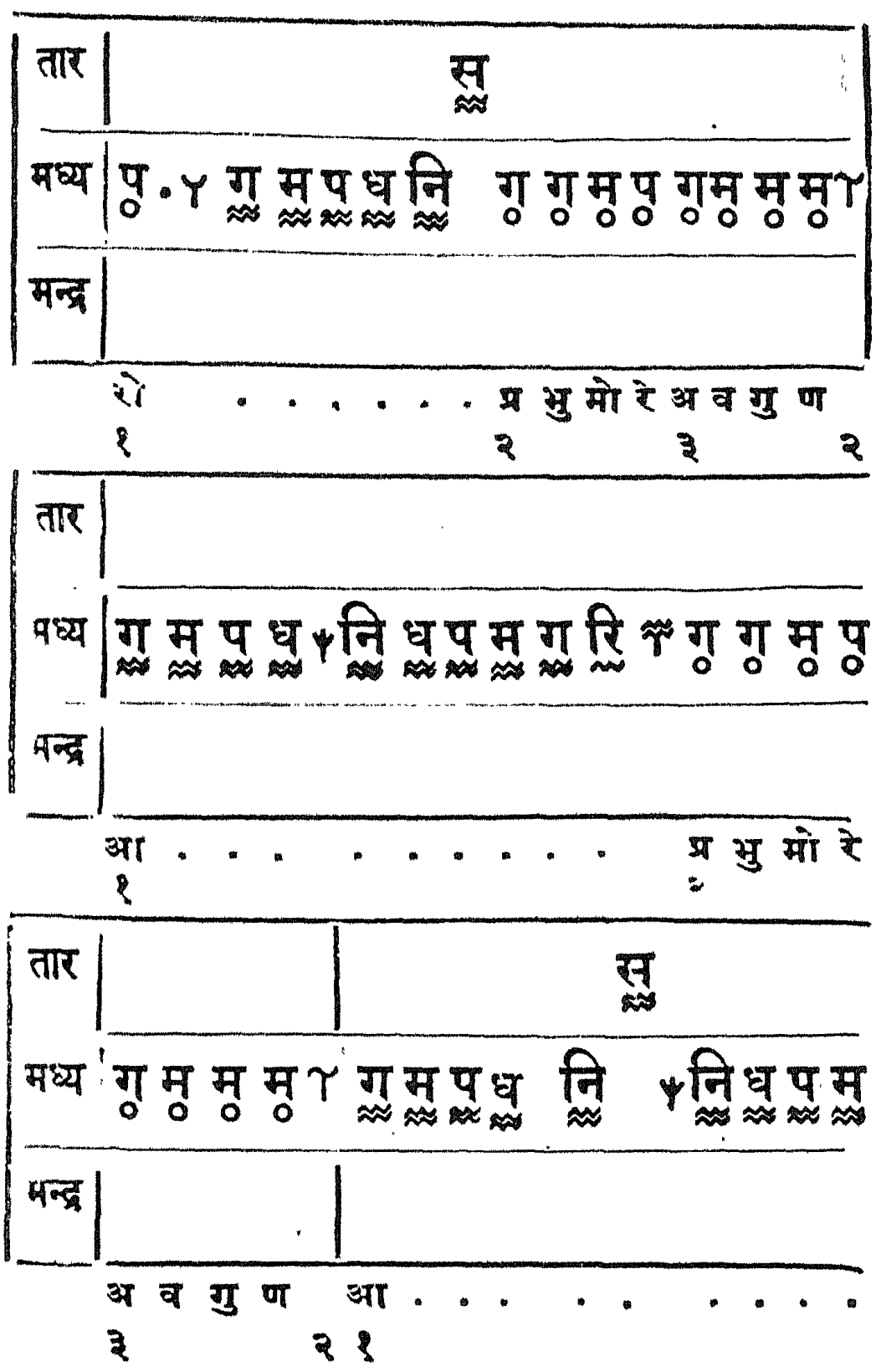
तार
मध्य
मन्द्र
रो . . . . . प्र भु मो रे अ व गु ण
१ २ ३ २
तार
मध्य
मन्द्र
आ . . . . . प्र भु मो रे
१
तार
मध्य
मन्द्र
अ व गु ण आ . . . . . .
३ २ १

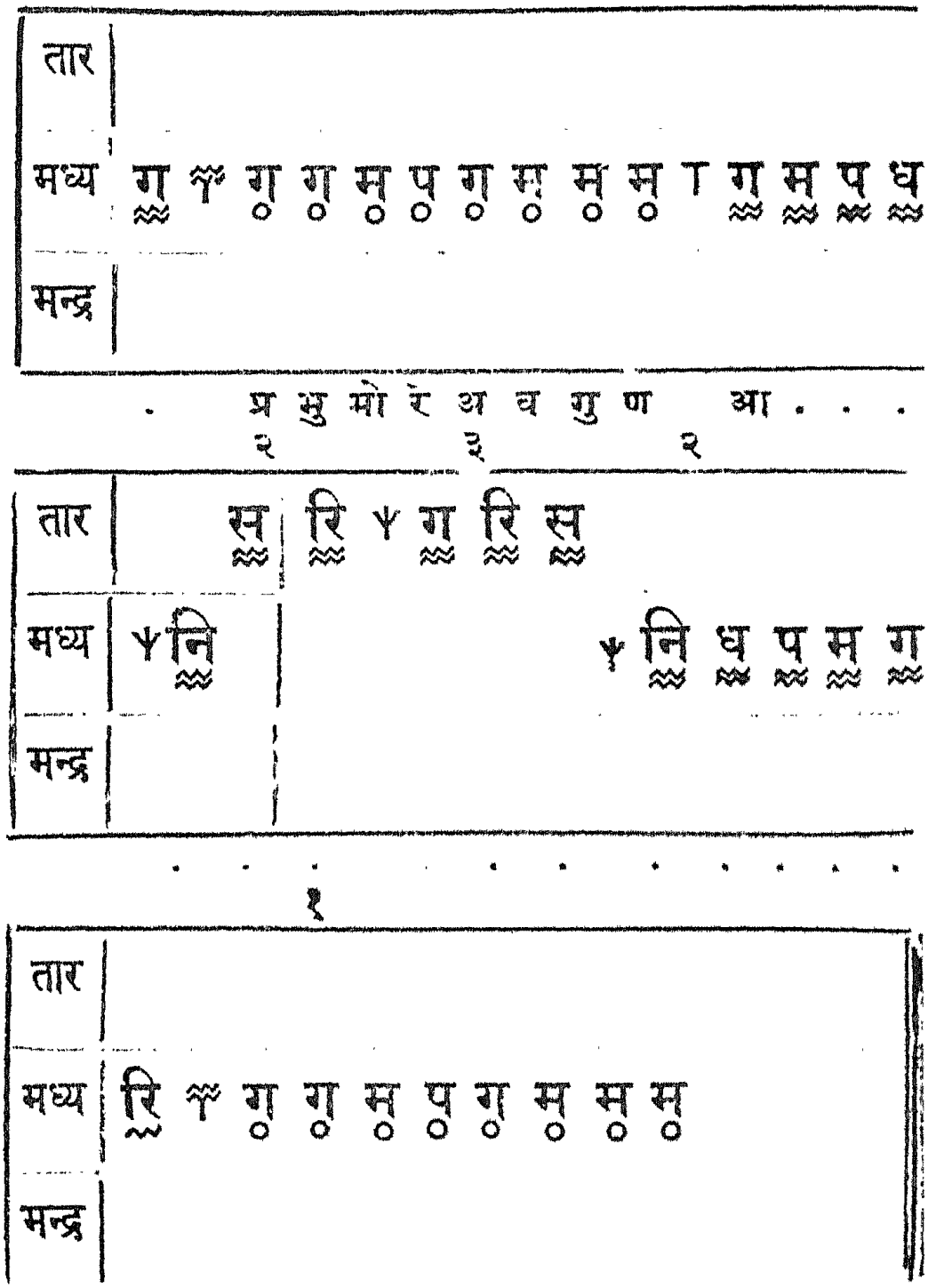

अध्यापकों के लिये सूचना—इस के आगे अस्ताई और अंतरे का दृगण सीखलानी.

राग खमाज, नंबर. ४.

इस राग में दो निषाद लगते हैं एक शुद्ध व दूसरा अतिकोमल. अतिकोमल नि के वास्ते निशानी होगी, बाकी के सब शुद्ध स्वर.

हम भक्तन के भक्त हमारे सुन अरजुन पर
तिज्ञा मारी यह व्रत टरत न टारे।
भक्तन काज लाज हिय धरके पाय पियादे धाये ॥

आगे के आलाप (हम भक्तन के) इस गीत पर लेना.
ताल तीनताल.

—:o:—

तार		सं सं सुरिं
मध्य	५निंधं गं गं मं पं धं	निं निं निं ५निंधं
मन्द्र		

हम भक्तन के . भक्त हमारे . . हम
३ २ १ २ ३

तार		
मध्य	गं गं मं पं धं सं गं मं पं गं मं रिं गं ५ ५निं धं	
मन्द्र		

भक्तन के . आ . . . . . हम
२ १ २ ३

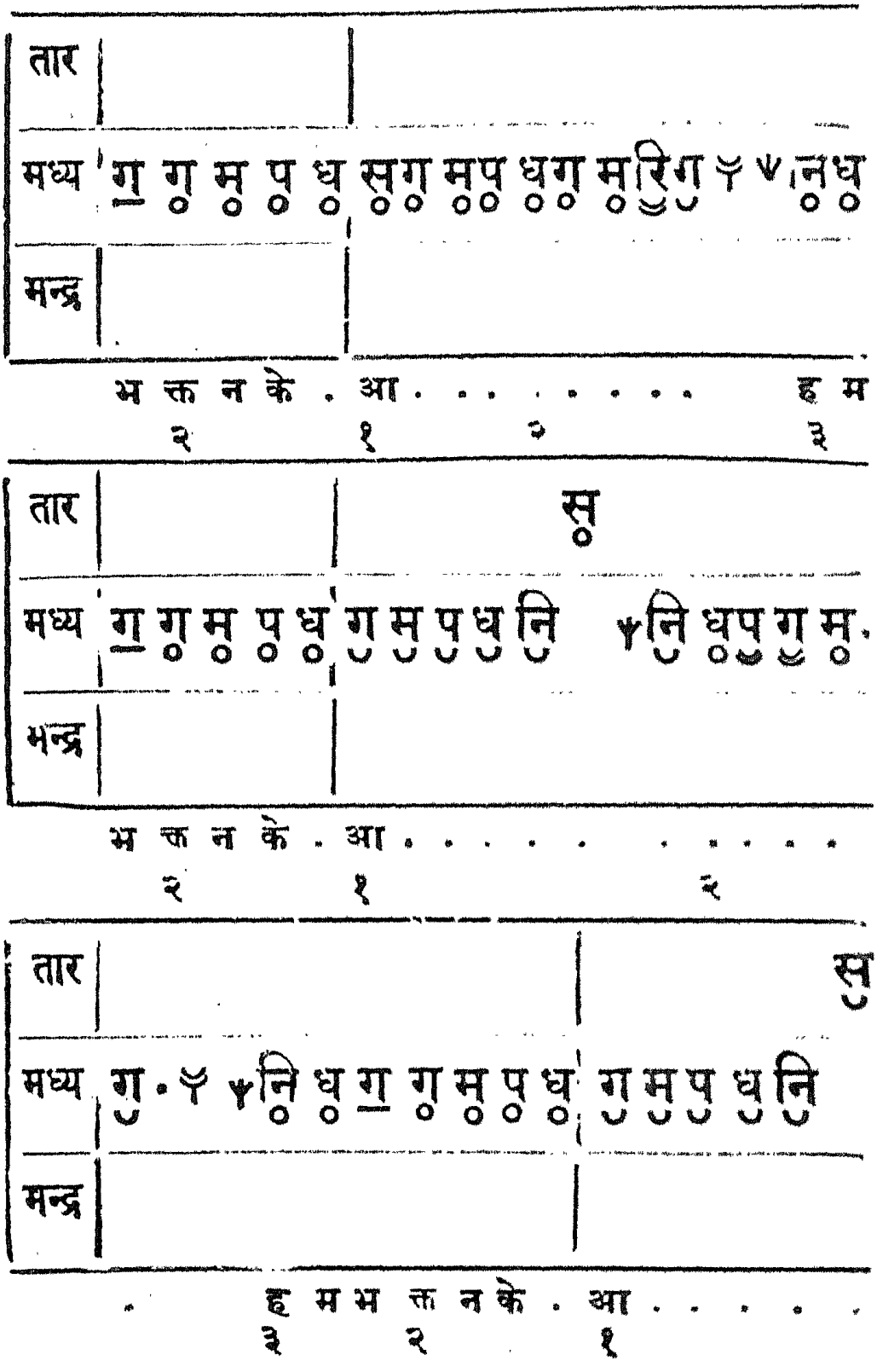
तार
मध्य
मन्द्र
भ क्त न के . आ . . . . . ह म
२ १ २ ३
तार
मध्य
मन्द्र
भ क्त न के . आ . . . . . .
२ १ २
तार
मध्य
मन्द्र
ह म भ क्त न के . आ . . . . .
३ २ १

*

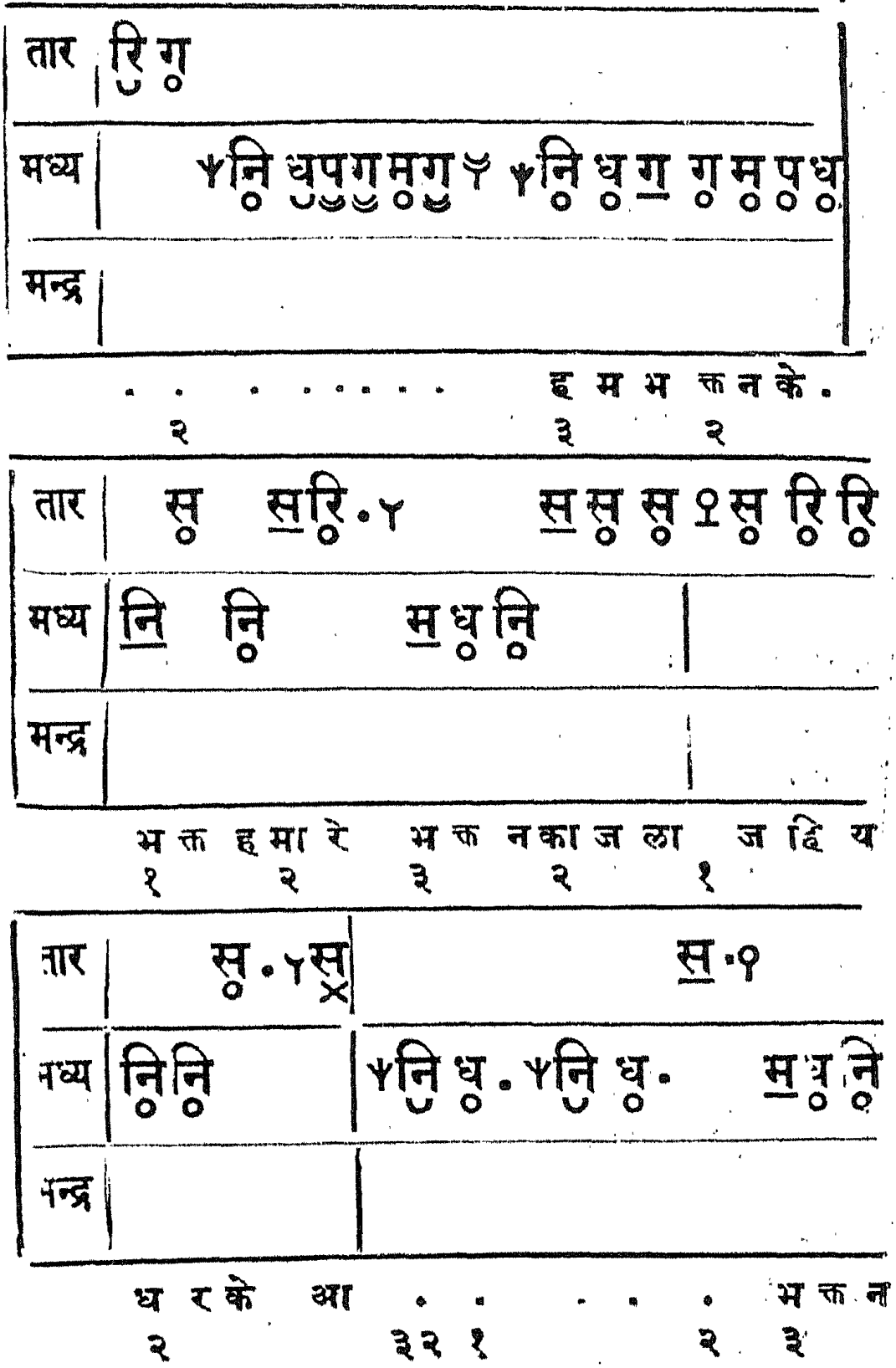
तार
मध्य
मन्द्र
हम भक्तनके.
भक्त हमारे भक्त नका जला जहिय
धरके आ भक्तना

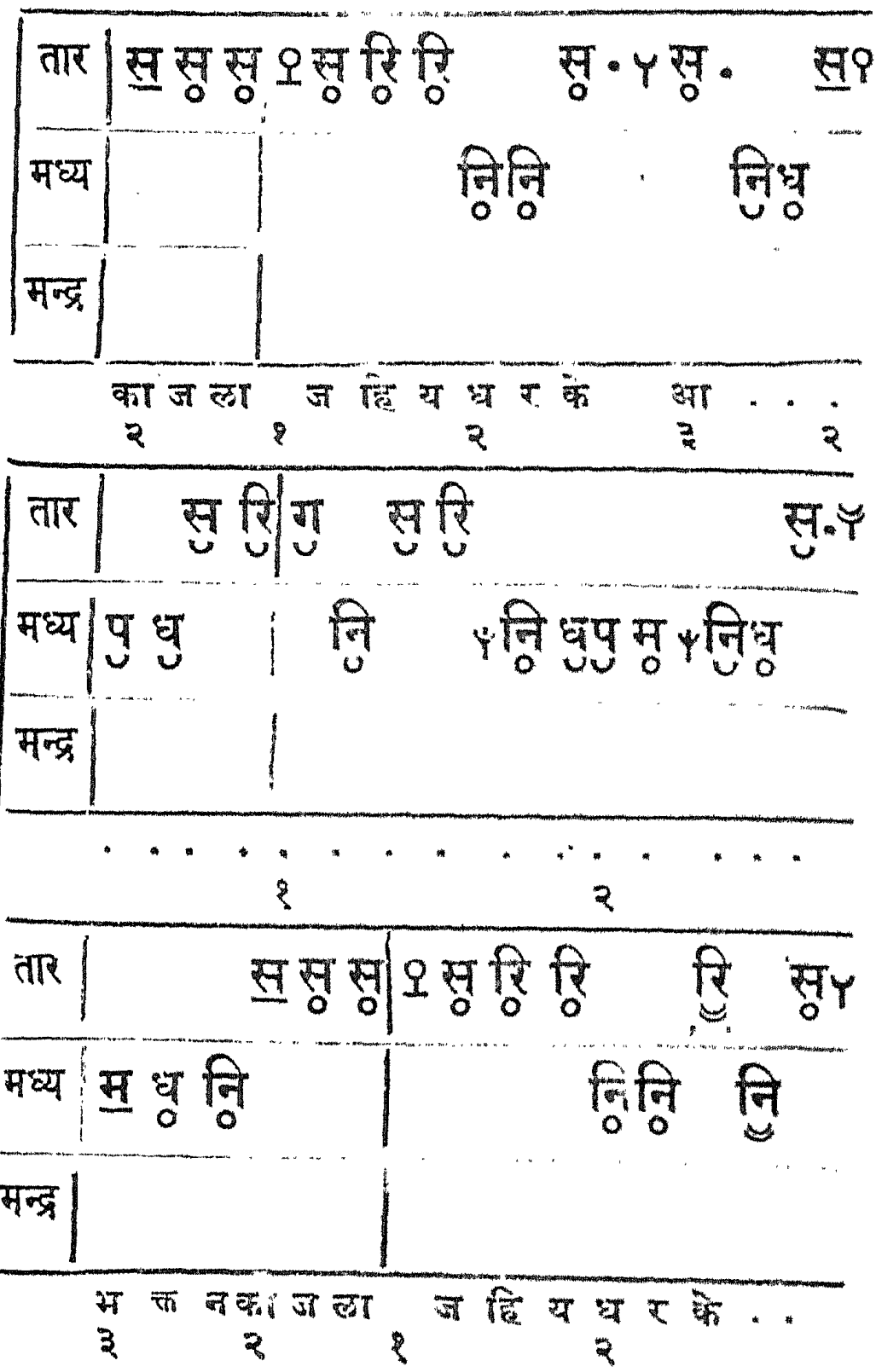
तार
मध्य
मन्द्र
काजला जहियधरके आ . . .
२ १ २ ३ २
तार
मध्य
मन्द्र
१ २
तार
मध्य
मन्द्र
भक्तनकाजला जहियधरके . .
३ २ १ २

तार	१सु ु ु मु रि ु सु रि ु ५	सु सु ु ५
मध्य	नि ु	नि नि ु ५
मन्द्र		

पा . य पी या . दें . . धा थे . .
३ २ १ २

तार	सु रि ु ५
मध्य	नि ु ५नि ु पु धु पमु गु रि ु ग ु . ५ग मु पु ध ु
मन्द्र	

. . . ह म . भ . . . क्त न के .
३ २

तार	सु सरि गरिसु
मध्य	१नि ु नि ु पु ध ु ५नि ु धु ५नि ु ध ु
मन्द्र	

भ क्त ह मा . . . . रे . . ह म
१ २ ३

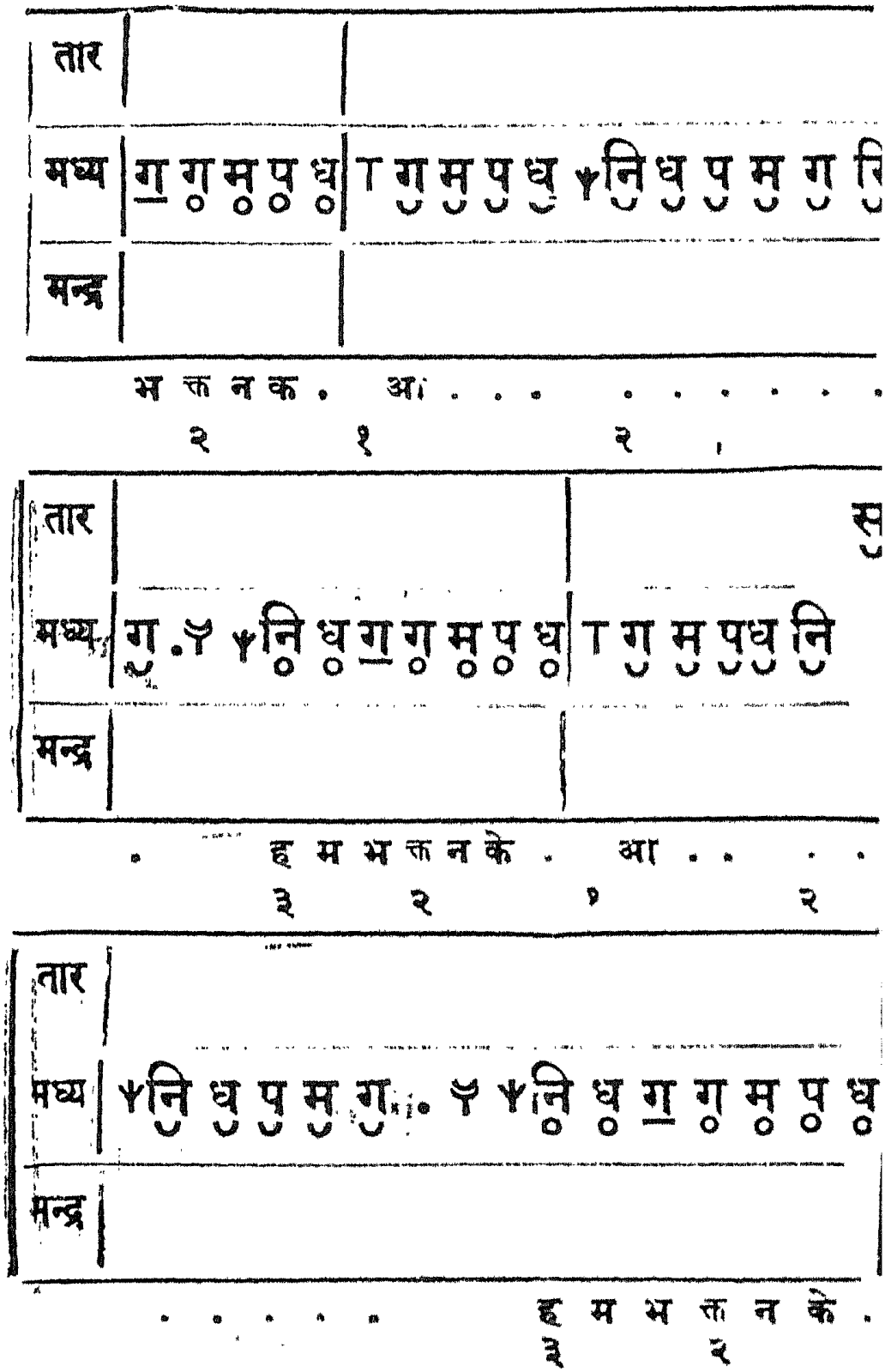
तार
मध्य
मन्द्र
भक्तनक. आ
२ १ २
तार
मध्य
मन्द्र
ह म भक्तनके. आ
३ २ १ २
तार
मध्य
मन्द्र
ह म भक्तनके.
३ २

तार	सु रि गु मु गु रि सु
मध्य	गु मु पु धु नि
मन्द्र	

आ . . . . . .
१ २

तार	
मध्य	५नि धु पु मु ५नि धु ग्र गु मु पु धु
मन्द्र	

. . . . ह म भ क्त न के .
३ २

अध्यापकों के लिये सूचना—इस के आगे अस्ताई और अंतरे की दूगण सीखलानी.

राग भूपाली, नंबर ५.

इस राग में मध्यम, निषाद वर्ज. बाकी के सब शुद्ध स्वर.

गाईये गणपति जगवंदन शंकर सुमन भवानी नंदन।
सिद्धि सदन गजवदन विनायक कृपा सिंधु सुंदर सब लायक॥

आगे के आलाप (गाईये गणपती) इस गीत पर लेना.
ताल तीनताल.

—:o:—

तार	स	स
मध्य	ध॰ प॰ ग॰ रि॰ स॰ रि॰ ग॰ ग॰ प॰ ग॰ ग॰	ध॰ प॰
मन्द्र		

गा ई य ग ण प ती ज ग वं द न गा ई ये
३ २ १ २ ३

तार		स
मध्य	ग॰ रि॰ स॰ रि॰	ा स॰ रि॰ स॰	ध॰ प॰ ग॰ रि॰ स॰ रि॰
मन्द्र		ध॰

ग ण प ती आ . . . गा ई ये ग ण प ती
२ १ २ ३ २

तार	स
मध्य	स॰ रि॰ ग॰ प॰ ध॰ प॰ ग॰ रि॰ स॰	ध॰ प॰ ग॰ रि॰ स॰ रि॰
मन्द्र	

आ . . . . . गा ई ये ग ण प ती
१ २ ३ २

तार	सु॰ स
मध्य	सुरिगपुध धपुगरि१ धपासरिगपु
मन्द्र	

आ . . . . . गा ई ये आ . . .
१ २ ३ २

तार	सुरिसु स सु
मध्य	धु धपुगरिसु१ धपुसरिगपुधु
मन्द्र	

. . . . . गा ई ये आ . . . .
१ २ ३ २

तार	रिगु१रिसु स
मध्य	धुगरिसु१ धपुगरिसरि
मन्द्र	

. . . . . गा ई य ग ण प ता
१ २ ३ २

तार		सु॰ सु॰
मध्य	गु॰ गु॰ पु॰ गु॰ गु॰ ॥ गु॰ गु॰ रि॰ । गु॰ पु॰ ध॰	ध॰
मन्द्र		

ज ग वं द न शं क र सु म न भ वा .
१ २ ३ २ १

तार	सु॰ । सरिगरिसस	सु॰ सु॰
मध्य	पध	धपं॰ ध॰ ध॰ पु॰ गु॰
मन्द्र		

नी नं . . . . द . न . गा . . ई ये ग
२ ३ २

तार		सु॰
मध्य	रि॰ गु॰ रि॰ सु॰ सु॰ सु॰ रि॰	गु॰ गु॰ पु॰ गु॰ गु॰ । गु॰ पु॰ ध॰
मन्द्र		

. ण . प . ती . ज ग वं द न सी द्धी स द
१ २ ३ २

तार	सं सं सं	सं रिं गं रिं सं रिं सं	सं सं ा
मध्य		ग पं धं
मन्द्र		

न ग ज व द न वि ना य क सीद्धी स द न
१ २ ३ २

तार	सं सं सं ं • ५	सं सं ा	सं रिं • सं १
मध्य	ध • ग पं धं	ध ं
मन्द्र		

आ . . . सीद्धी स द न आ . . .
१ २ ३ २ १ २

तार	सं सं • ँ सं रिं	गं रिं सं रिं सं
मध्य	ग पं धं पं धं	धं •
मन्द्र		

सीद्धी स द न आ . . . . . .
३ २ १ २

तार	स ऽ ऽ सं सं सं सं सं रिं रिं गं गं रिं
मध्य	गं पं धं
मन्द्र	

. सी द्धी स द न ग ज व द . न . वी ना
३ २ १ २

तार	सं . रिं सं सं सं ऽ रिं सं
मध्य	धं धं धं . १ पं . ४ पं धं
मन्द्र	

. य क कृ पा . सिं धू सुं द र .
३ २ १

तार	स
मध्य	धं धं . पं गं रिं . सं सं . ४ धं पं गं रिं सं रिं
मन्द्र	

स . ब ला . य क गा ई ये ग ण प ती
२ ३ २

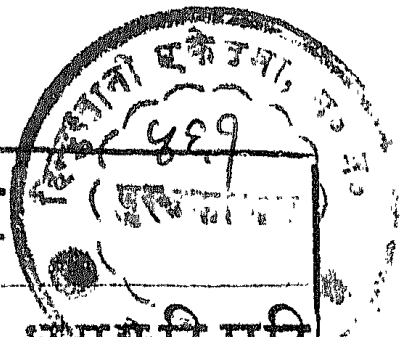

तार	स
मध्य	ा सरिग पधध पपगरिस१ धपपगरिसरि
मन्द्र	

आ . . . . . गाईयेगण पतो
१ २ ३ २

तार	सस स
मध्य	सरिग पध धपपगरिस.१ धपगरि
मन्द्र	

आ . . . . . गाईयेगण
१ २ ३ २

तार		सरिरिसस
मध्य	सरि	सरेगपध धपपगरिस
मन्द्र		

पती आ . . . . . .
१ २

तार	स	सु रि ग ग रि सु सु
मध्य	ध प ा सु रि ग प	ध
मन्द्र		

गा ई ये आ . . . . . .
३ २ १

तार	स	
मध्य	ध प प ग रि सं	ध प ग रि सं रि
मन्द्र		

. . . . . गा ई ये ग ण प ती
२ ३ २

अध्यापकों के लिये सूचना—इस के आगे अस्ताई और अंतरे की दुगण सिखलानी.

राग बिहाग, नंबर ६.

इस राग में दो मध्यम, एक शुद्ध दूसरा तीव्रतर, तीव्रतर, मध्यम के वास्ते निशानी होगी. आरोह में ऋषभ और धैवत वर्ज. बाकी के सब शुद्ध स्वर लगते हैं.

नाम जपन क्यों छोड दिया क्रोध न छोडा झूट न छोडा सत्य बचन क्यो छोड दिया। झूट जगम दिल लल चाकर असल वतन क्यों छाड दिया काडी का तो खूब समाला लाल रतन क्यो छोड दीया ॥

आगे के आलाप (नाम जपन क्यों) इस गीत पर लेना.
ताल तीनताल.

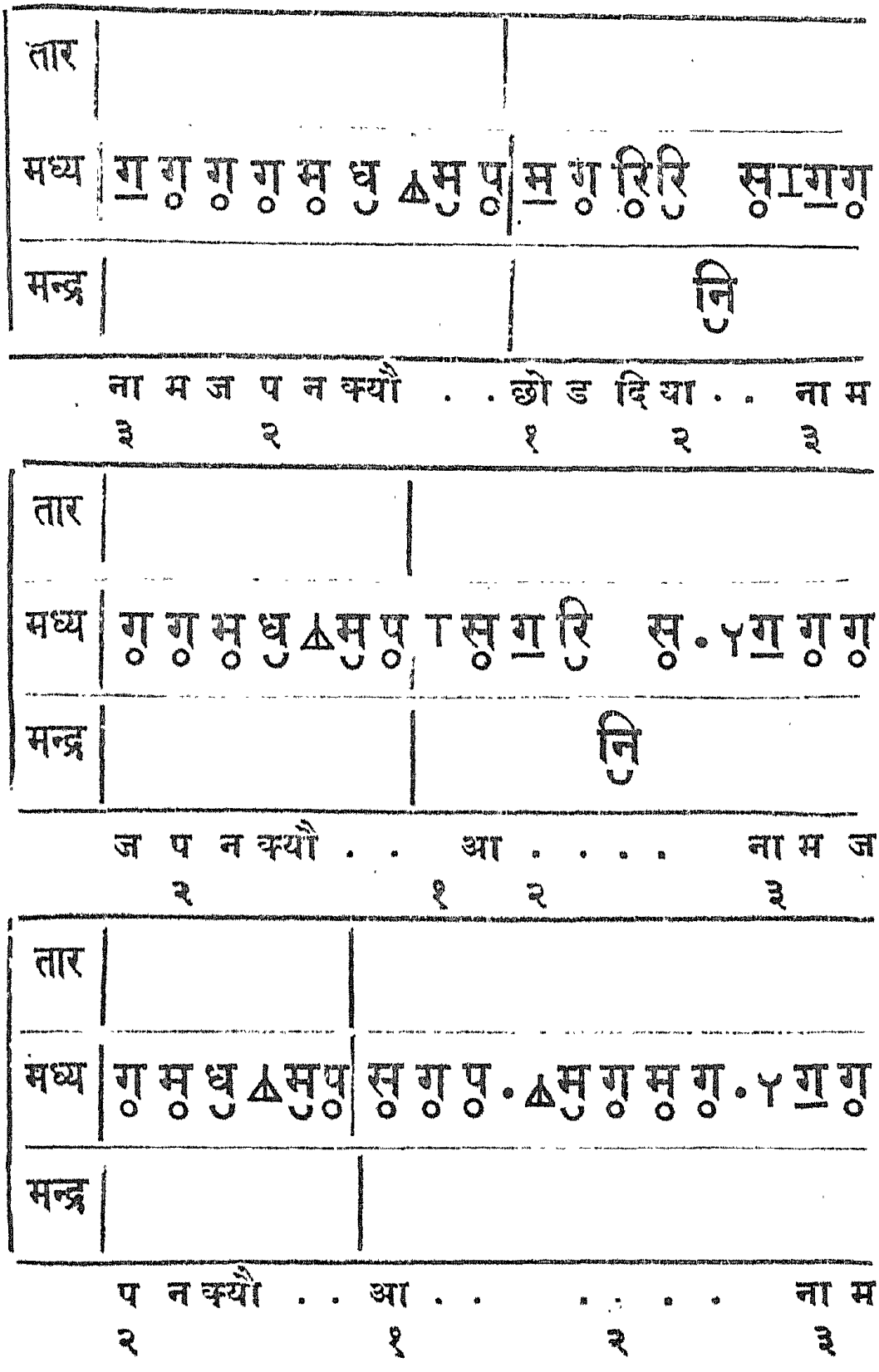
तार
मध्य
मन्द्र
नि
ना म ज प न क्यौ . . छो ड दि या . . ना म
३ २ १ २ ३
तार
मध्य
मन्द्र
नि
ज प न क्यौ . . आ . . . . ना म ज
२ १ २ ३
तार
मध्य
मन्द्र
प न क्यौ . . आ . . . . . ना म
२ १ २ ३

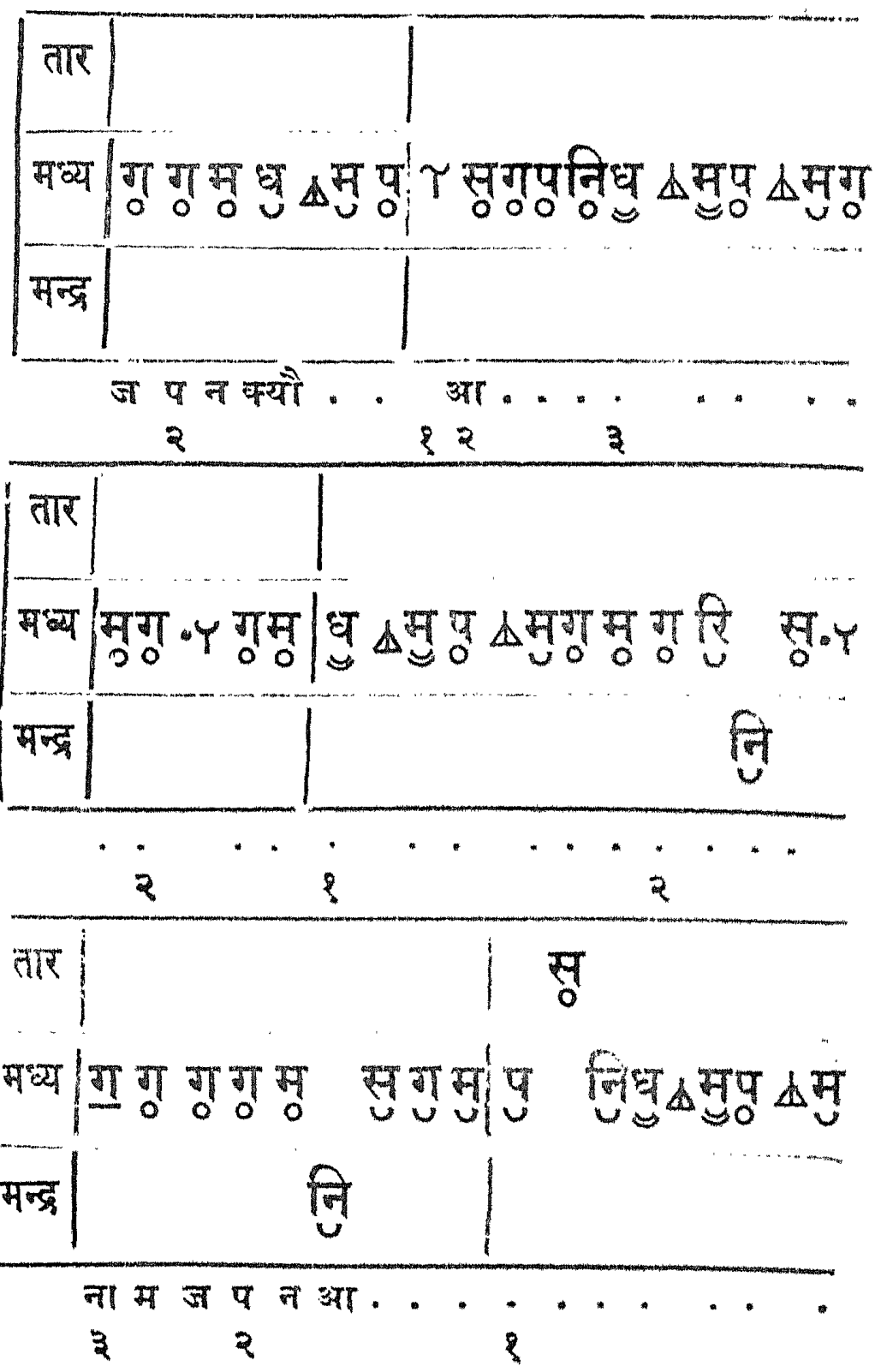
तार
मध्य
मन्द्र
ग॒ ग॒ म॒ ध॒ ⏃म॒ प॒ ˊ सं॒ ग॒ प॒ नि॒ध॒ ⏃म॒ प॒ ⏃म॒ ग॒
ज प न क्यौ . . आ . . . . . .
२ १ २ ३
तार
मध्य
मन्द्र
म॒ग॒ ॰ˊ ग॒म॒ ध॒ ⏃म॒ प॒ ⏃म॒ ग॒ म॒ ग॒ रि॒ सं॒ ॰ˊ
नि॒
. . . . . .
२ १ २
तार
मध्य
मन्द्र
सं॒
ग॒ ग॒ ग॒ ग॒ म॒ सं॒ ग॒ म॒ प॒ नि॒ध॒ ⏃म॒ प॒ ⏃म॒
नि॒
ना म ज प न आ . . . . . .
३ २ १

तार	सु ग॰
मध्य	ग॰ सुग॰ ४ग॒ ग॰ ग॰ ग॰ सु॰ सगसु पु नि
मन्द्र	नि

. . . नाम जपन आ . . . . . .
२ ३ २ १

तार	रि
मध्य	निनि ध॑ सु॰ प॑ सुग सुग ४ग॒ ग॰ ग॰ गसु ध॒
मन्द्र	

. . . . . नाम जपन क्यौं
२ ३ २

तार	
मध्य	॑सु पु १गसु रि॰ गरि सु॰ ४ ग॰
मन्द्र	नि पुनिनि

. . छा . ड दिया . क्रोधन
१ २ ३

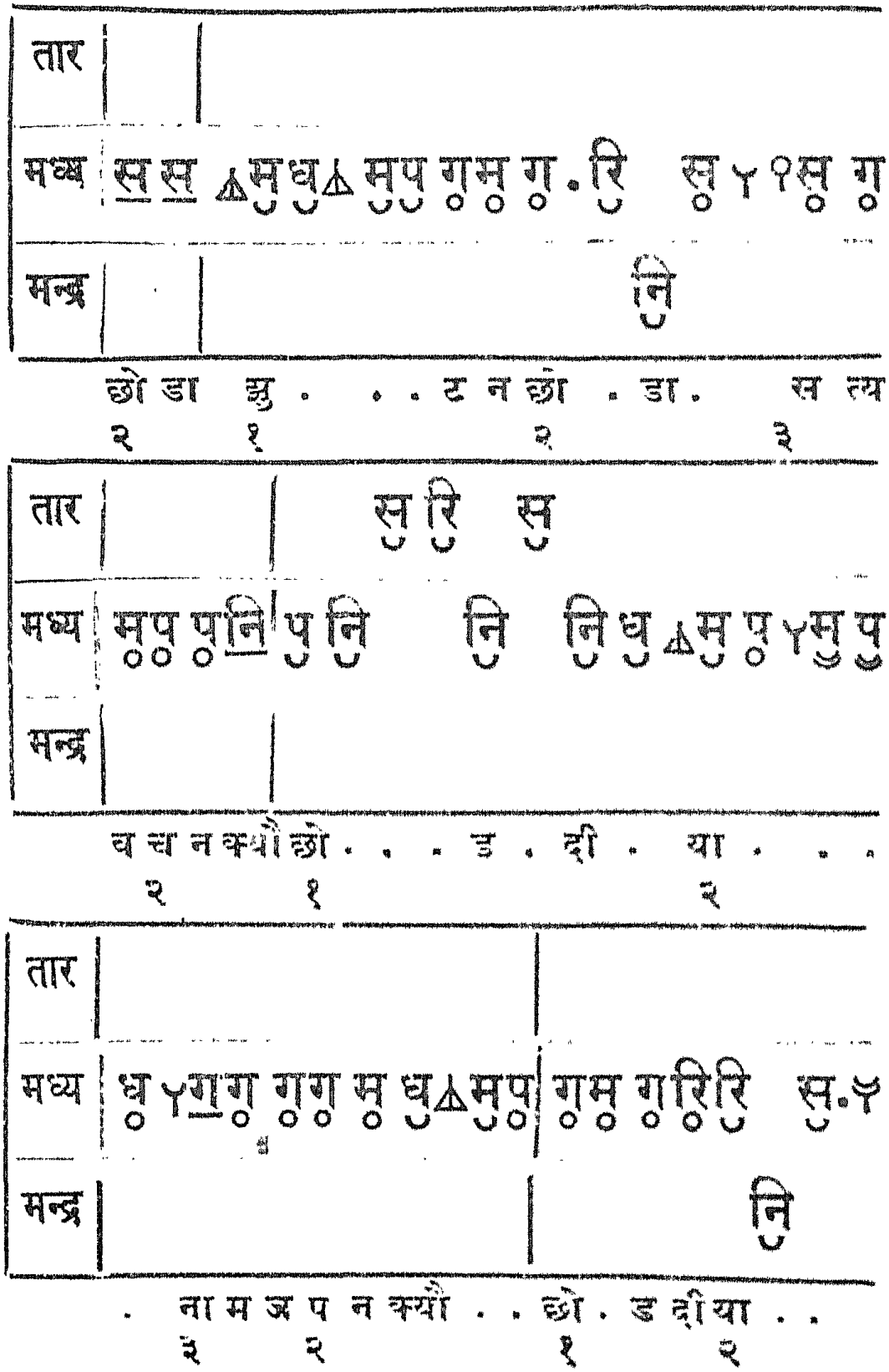
तार
मध्य स स ⏃मु ध ⏃मु प गु मु गु . रि सु ४ १ सु गु
मन्द्र नि
छो डा झु . . . ट न छो . डा . स त्य
२ १ २ ३
तार सु रि सु
मध्य मु प प नि प नि नि नि ध ⏃मु प ४ मु प
मन्द्र
व च न क्यौ छो . . . ड . दी . या . . .
२ १ २
तार
मध्य ध ४ ग ग गु ग मु ध ⏃मु प गु मु ग रि रि सु . ४
मन्द्र नि
. ना म ज प न क्यौ . . छो . ड दी या . .
३ २ १ २

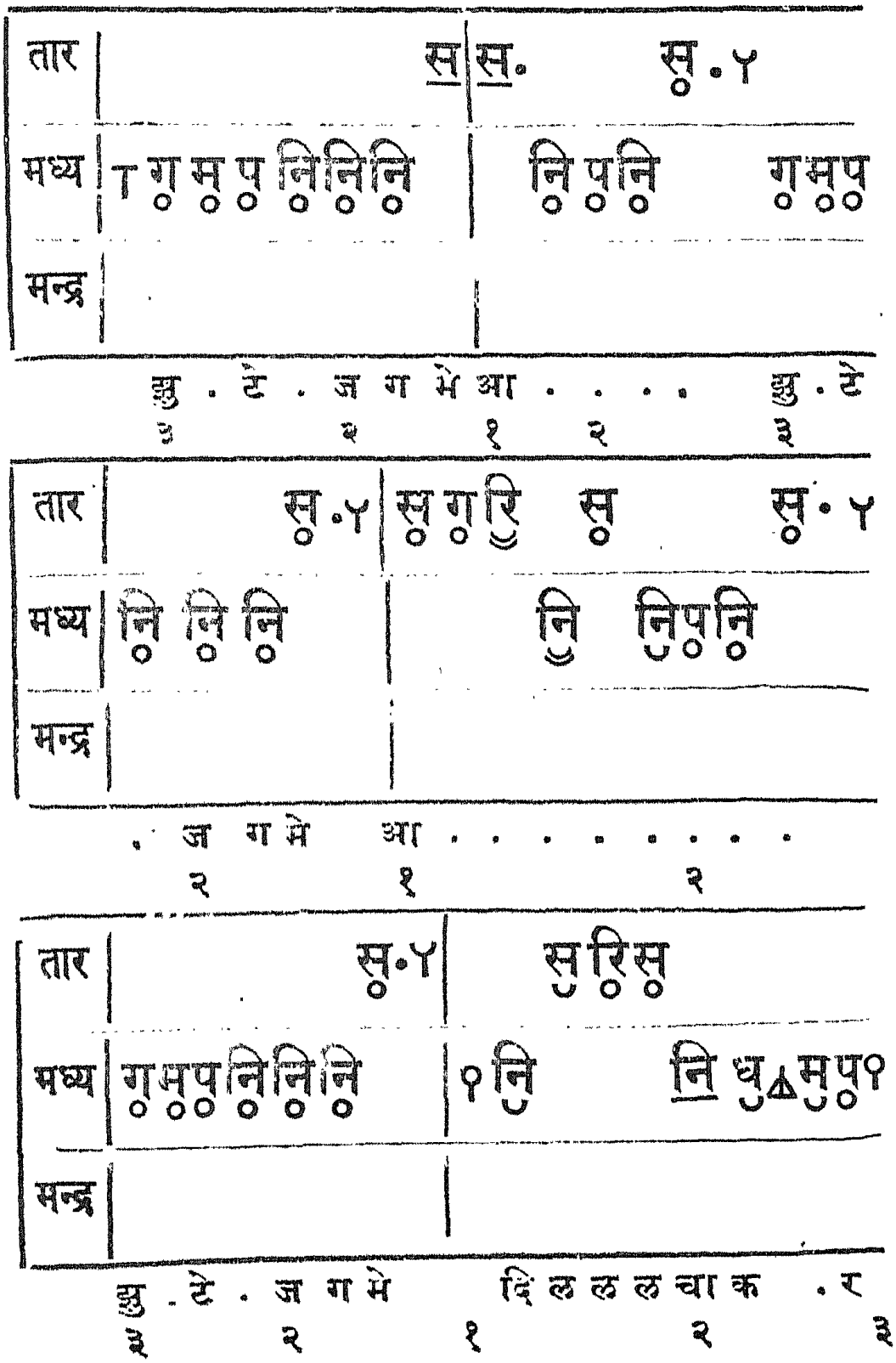
तार
स स. सु.१
मध्य
T ग॰ म॰ प॰ नि॰ नि॰ नि॰
नि॰ प॰ नि॰
ग॰ म॰ प॰
मन्द्र
झु . टे . ज ग मे आ . . . . झु . टे
३ २ १ २ ३
तार
सु.१ सु ग॰ रि॰ सु
सु.१
मध्य
नि॰ नि॰ नि॰
नु॰ नि॰ प॰ नि॰
मन्द्र
. ज ग मे आ . . . . . .
२ १ २
तार
सु.१ सु रि॰ सु
मध्य
ग॰ म॰ प॰ नि॰ नि॰ नि॰
१ नि॰ नि॰ ध॰ म॰ प॰ १
मन्द्र
झु . टे . ज ग मे दि ल ल ल चा क . र
३ २ १ २ ३

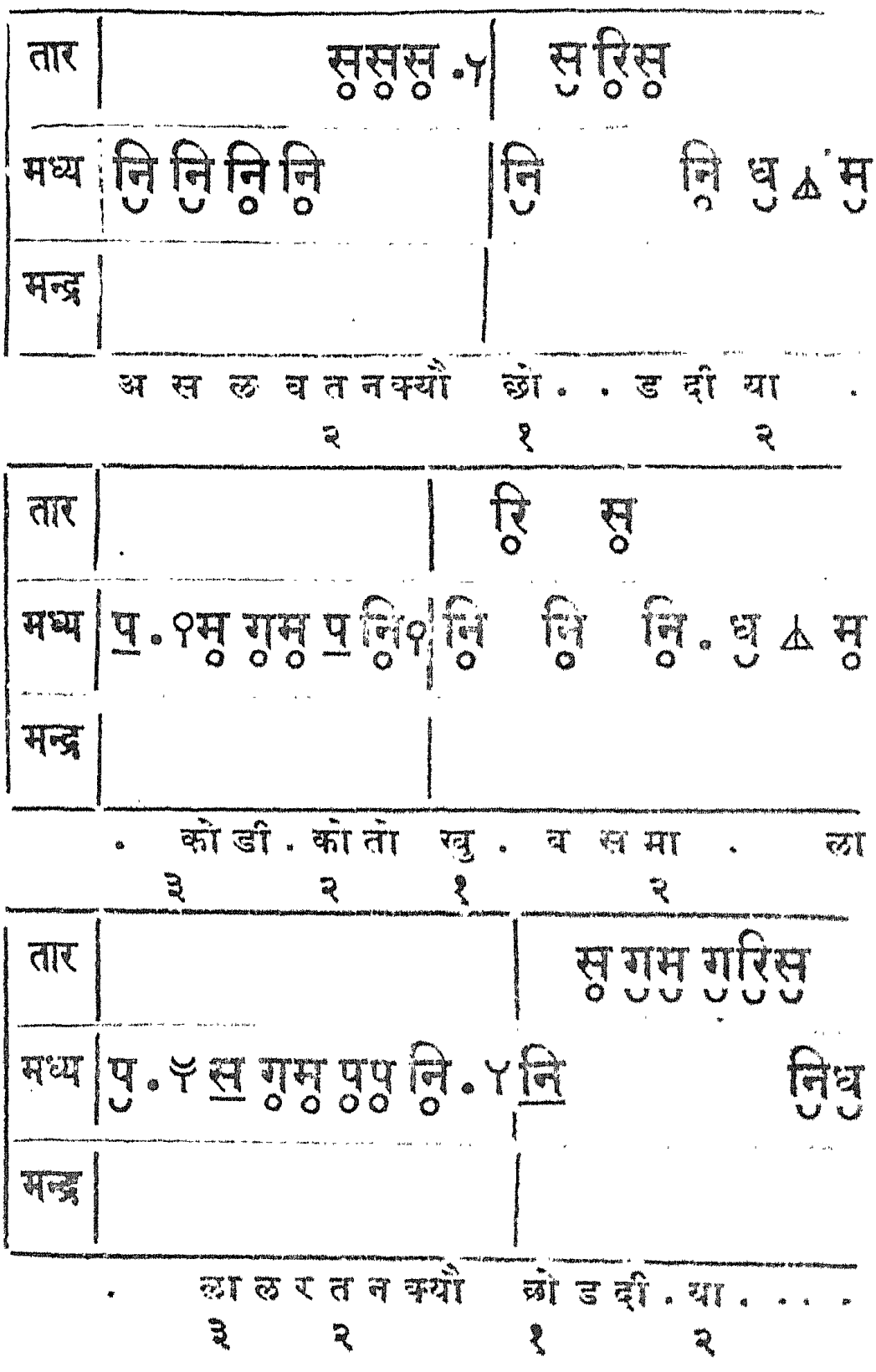
तार
मध्य
मन्द्र
अ स ल व त न क्यौ छो . . ड दी या .
२ १ २
. को डी . को तो खु . व स मा . ला
३ २ १ २
. ला ल र त न क्यौ छो ड दी . या . . .
३ २ १ २

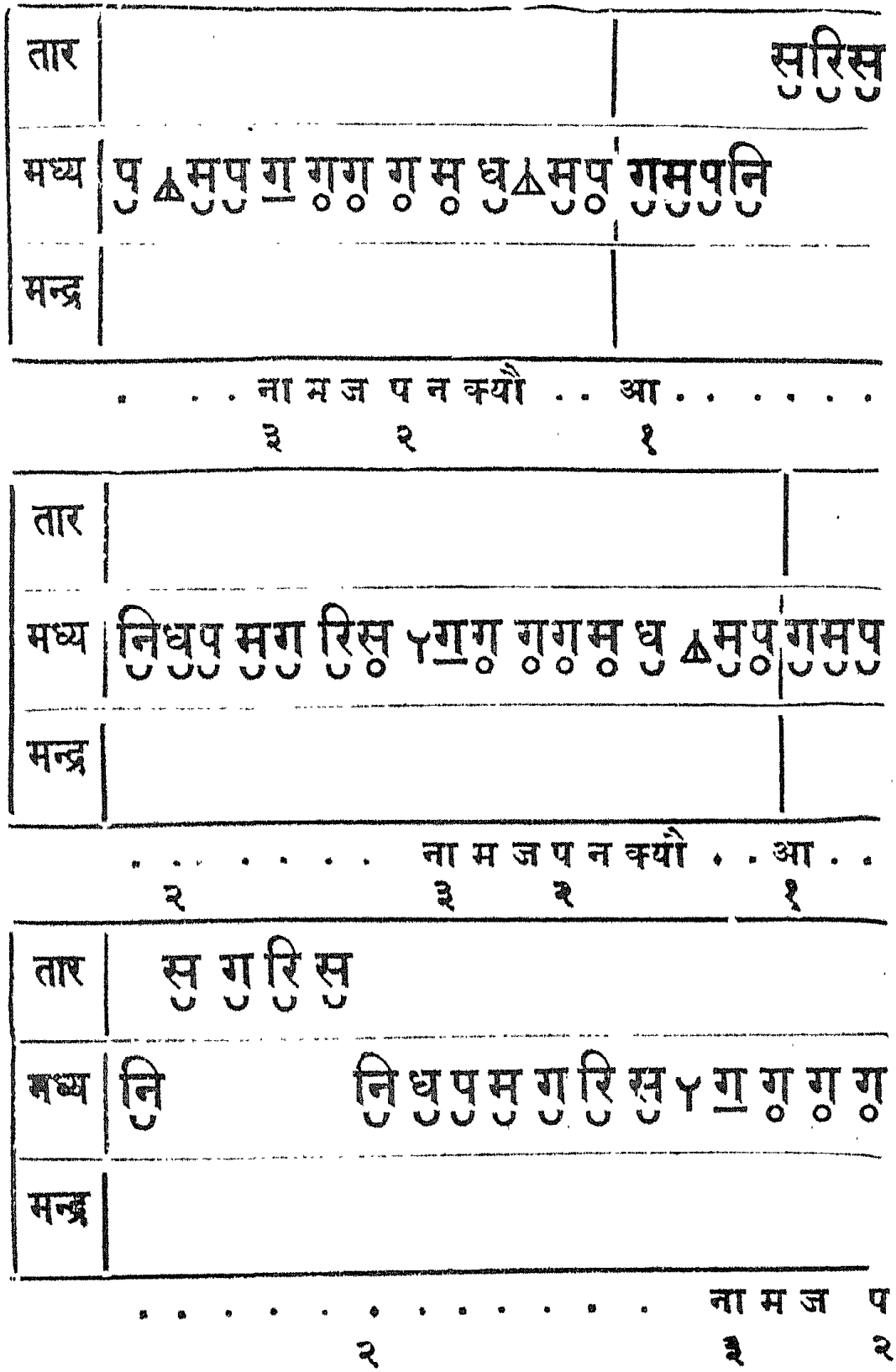
तार
सुरिसु
मध्य
पु ⚠मपु ग्र गृगृ गृ मृ धु⚠मपु गमपनि
मन्द्र
. . . ना म ज प न कयौ . . आ . . . . . .
३ २ १
तार
मध्य
निधुपु मगु रिसु ५ग्र गृ गृगृमृ धु ⚠मपु गमपु
मन्द्र
. . . . . ना म ज प न कयौ . . आ . .
२ ३ २ १
तार
सु गु रि सु
मध्य
नि निधुपु मगु रिसु ५ग्र गृ गृ गृ
मन्द्र
. . . . . ना म ज प
२ ३ २

तार		सु ग़ मु प़ मु ग़ रि सु
मध्य	मु ग़ मु प़ नि़	नि ध़
मन्द्र		

न आ . . . . . .
१ २

तार	
मध्य	प़ मु ग़ रि सु॰ ग्र ग़ ग़ ग़ मु ध़ ∆ मु प़
मन्द्र	

. . . . . ना म ज प न क्यों . .
३ २

अध्यापकों के लिये सूचना—इस के आगे अस्ताई और अन्तरे की दुगण सिखलानी.

राग झिंजोटी, नंबर ७.

इस राग में दो गंधार दो निषाद, अतिकोमल गंधार और अतिकोमल निषाद के वास्ते निशाणी होगी.

वार बार समजाय रही मे मानलेरे मन मेरी कहीको।
दुख सुखसो वीती सो वीती यादन करवर बाद वहीको॥

आगे के आलाप (वार वार समजाय) इस गीत पर लेना
विलंबित तीनताल.

तार	
मध्य	प॒ ग॒ म॒ म॒ प॒ म॒ रि॒ ४ ग॒ ४ ग॒ स॒ रि॒ ० १ प॒ ४ नि॒
मन्द्र	

बा र बा र स म जा य र ही मै बा र
१ २ ३ २ १

तार	
मध्य	ध॒ ० प॒ म॒ ग॒ ० म॒ प॒ ध॒ म॒ प॒ ४ ग॒ रि॒ ० I ४ ग॒ ० ४
मन्द्र	

. बा . . र स . म . जा . य
२ ३

तार	
मध्य	स॒ रि॒ म॒ प॒ ध॒ ४ नि॒ प॒ ध॒ म॒ प॒ ४ ग॒ म॒ रि॒ ४ ग॒ ४
मन्द्र	

आ . . . . . .
२

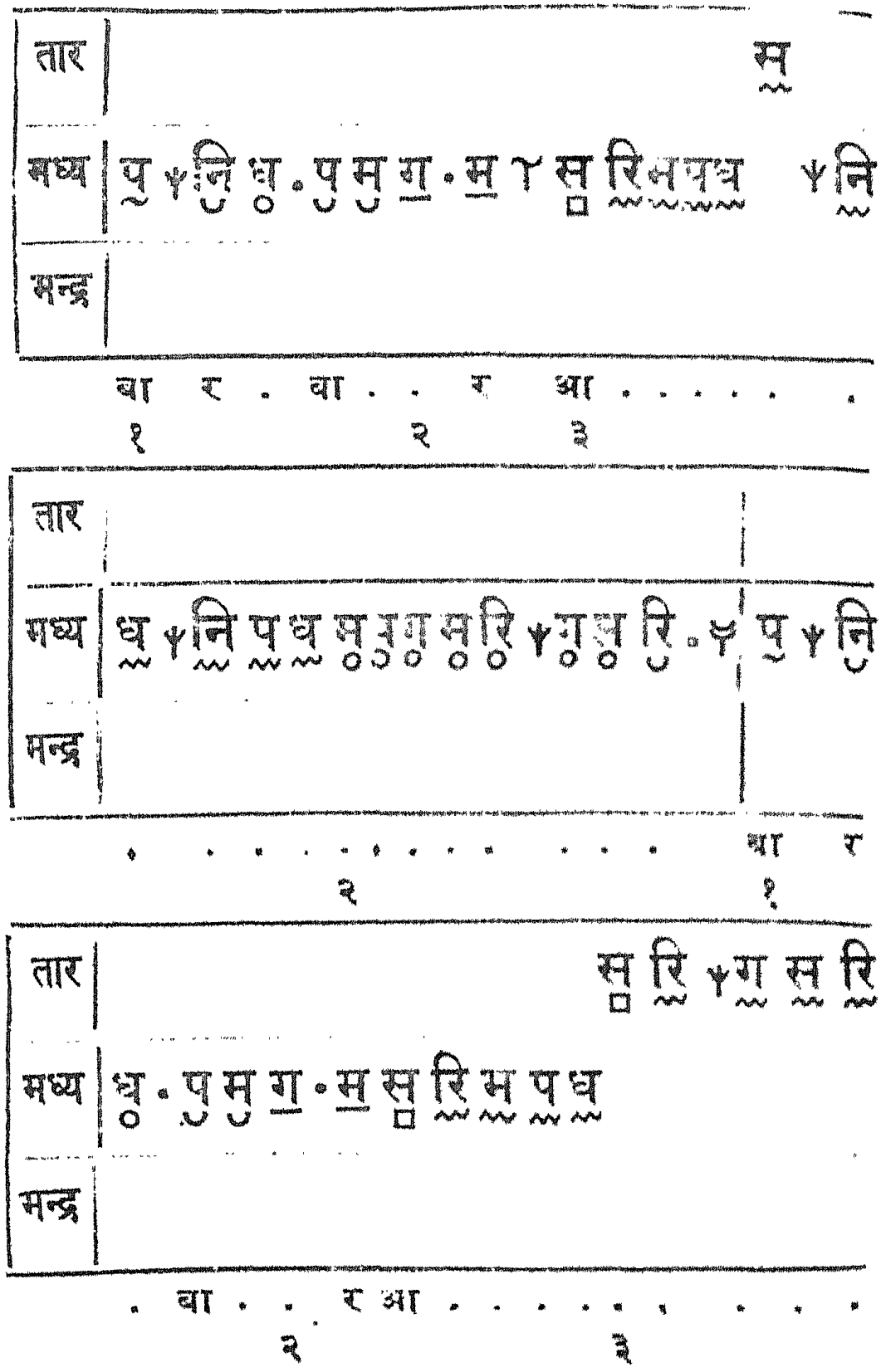
तार
मध्य
मन्द्र
बा र . वा . . र आ . . . . .
१ २ ३
तार
मध्य
मन्द्र
. . . . . बा र
२ १
तार
मध्य
मन्द्र
. बा . . र आ . . . . . .
२ ३

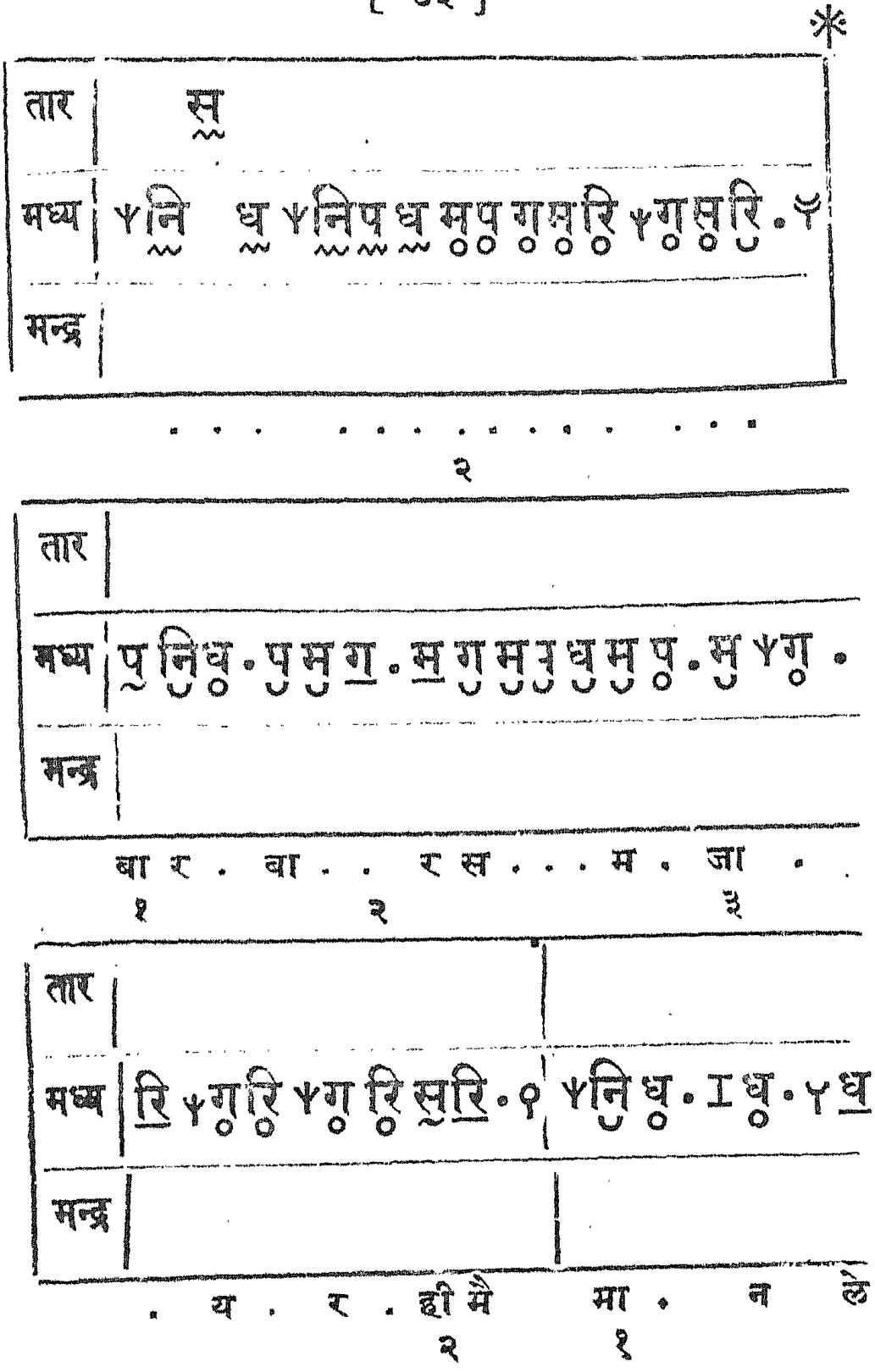
तार
मध्य
मन्द्र
२
बा र . बा . . र स . . . म . जा .
१ २ ३
तार
मध्य
मन्द्र
. य . र . ह्री मै मा . न ले
२ १

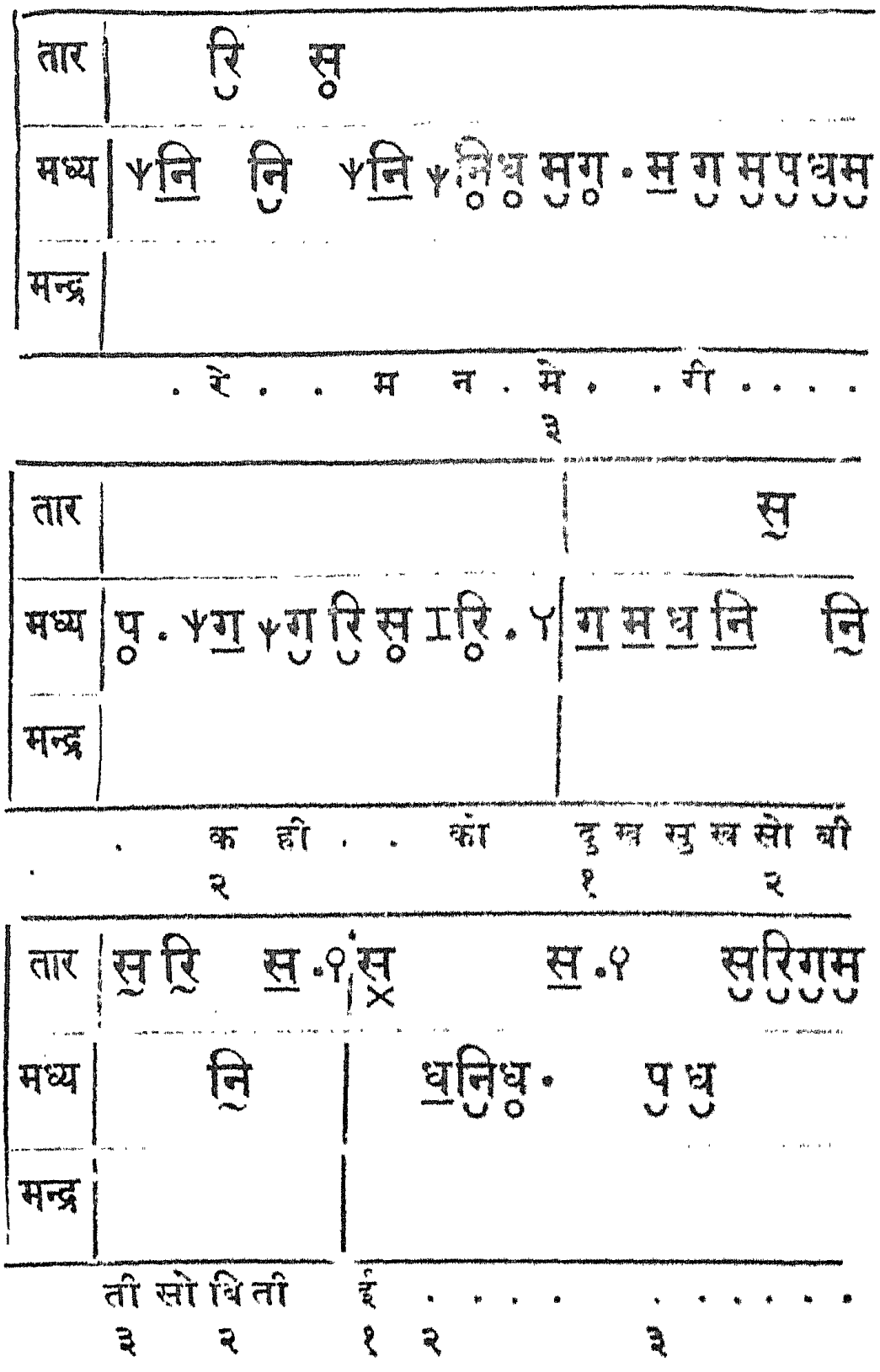
तार
मध्य
मन्द्र
. रे . . म न . मे . . गी . . . .
३
तार
मध्य
मन्द्र
. क ही . . कों दु ख सु ख सो बी
२ १ २
तार
मध्य
मन्द्र
ती सो बि ती ई . . . . . .
३ २ १ २ ३

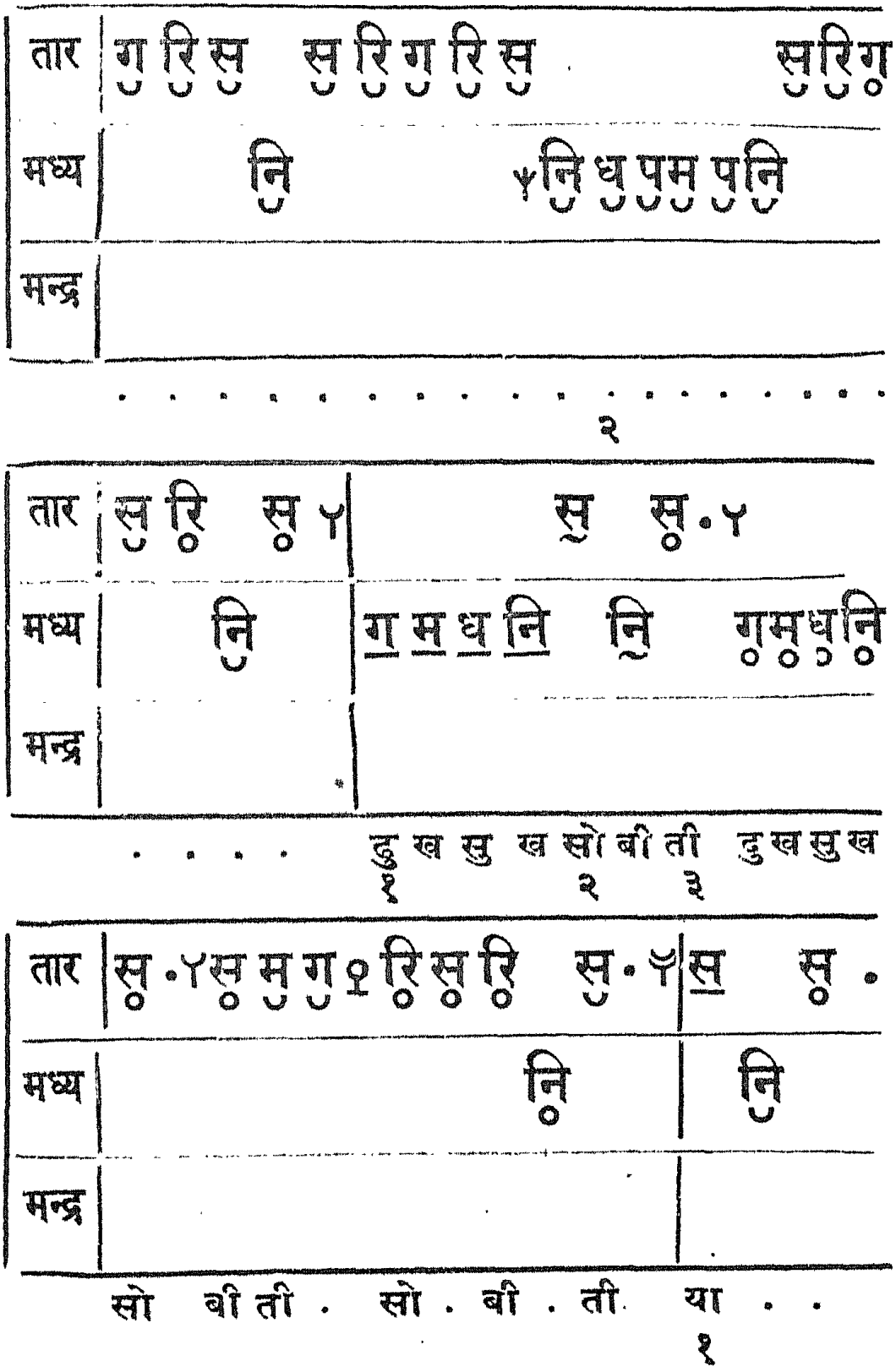
तार
मध्य
मन्द्र
२
तार
मध्य
मन्द्र
दुःख सुख सो बी ती दुःख सुख
१ २ ३
तार
मध्य
मन्द्र
सो बी ती . सो . बी . ती या . .
१

तार	
मध्य	५नि ध प ग म प ध म प ५ग रि ० ० ०

तार	सु
मध्य	प्र ग्र म्र म्र ९ . स्र रि म प ध ५नि ध प ध ५नि
मन्द्र	

बा र बा र आ . . . . . .
१ २ ३ २

तार	रि ५ग ५ग रि म म ५ग रि स
मध्य	५नि ध प म प ५
मन्द्र	

. . . . . .

तार	
मध्य	प्र ग्र म्र म्र ा स्र रि म प ध ५नि ध प ध नि
मन्द्र	

बा र बा र आ . . . . . .
१ २ ३

तार	सु रि ४ गु ४ गु रि सु रि ४ गु मु पु मु ४ गु
मध्य	
मन्द्र	

२

तार	रि सु
मध्य	४ नि धु पु मु गु रि सु सु ४
मन्द्र	नि

अध्यापकों के लिये सूचना–इस के आगे अस्ताई और अंतरे का दूगण सिखलानी.

समाप्त.

टेलिफोन नं. ५९२१.

शिक्षण.

हेड ऑफिस:—सॅन्डहर्स्ट रोड,—बम्बई.

ब्रँच ऑफिसें:—लाहोर, नागपूर, नाशिक, कोल्हापूर.

इस विद्यालय में गायनवादन (तबला, हारमोनियम, दिलरुबा, सतार, फिडल वगैरे) सीखने की व्यवस्था है शिक्षण का समय प्रातःकाल (स्टँ. टा.) ७ से ९ और सायंकाल को ४ से ८ तक रखा गया है.

इस के अतिरिक्त कुलीन स्त्रियों तथा कन्याओं को सीखलाने के लिये खास प्रबंध है.

घर बैठे शिक्षण:—जिन सज्जन पुरुषोंके आपने घरमें संगीत शिक्षण लेनेकी इच्छा होय उनके लिये हो सकती है.

पुस्तकें:—गायनवादनकी उपयुक्त मिलती है.

म्युझिकल पार्टी:—विवाह और वादन की पार्टी मिलती है.

गांधर्व महा वि